कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

●भोपाल, मंगलवार 17 से 23 दिसम्बर 2024 ●वर्ष-25 ●अंक-30 ●पृष्ठ-16 ●मूल्य-13 रु. ●RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र. एम.पी./भोपाल/625/2024-26

चहुँमुखी विकास के साथ मोहन सरकार का एक वर्ष पूर्ण

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि देश का हृदय प्रदेश अपने वन, जल, अन्न, खनिज, कला, संस्कृति और परंपराओं की समृद्धि के लिए प्रसिद्ध है अपना मध्यप्रदेश। पुण्य सलिला माँ नर्मदा और भगवान श्रीमहाकालेश्वर की पावन छाया अनगिनत बलिदानियों और महापुरुषों की कर्मभूमि एवं तपोभूमि रहा हमारा प्रदेश ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक रूप से समृद्ध है।

मध्यप्रदेश अपने सांस्कृतिक वैभव को संरक्षित करते हुए विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प के तहत, प्रदेश (गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी के सशक्तिकरण) पर आधारित चार मुख्य स्तंभों पर कार्य कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रदेश में औद्योगिक विकास के लिए नवाचारी पहल करते हुए रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव और रोड शो के माध्यम से हर क्षेत्र के औद्योगिक विकास को बल दिया जा रहा है। राज्य सरकार के प्रतिबद्ध प्रयासों का ही यह सुखद परिणाम है कि नए निवेश प्रस्तावों से मध्यप्रदेश का औद्योगिक परिदृश्य सुदृढ़ होने और नए रोज़गार के अवसर सृजित होने की राहें खुल रही हैं। सांस्कृतिक पुनर्जागरण के क्रम में श्रीराम वन गमन पथ, श्रीकृष्ण पाथेय और विक्रम संवत की पुनर्स्थापना जैसे अनेक प्रयास हमारी ऐतिहासिक धरोहर को नई ऊर्जा दे रहे हैं। यह समय आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति का है। मध्यप्रदेश की साढ़े आठ करोड़ जनता के सहयोग और संकल्प से हम आत्मनिर्भर प्रदेश का निर्माण करके विकसित भारत के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए कृत संकल्पित हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर भोपाल में मीडिया प्रतिनिधियों से संवाद करते हुए कहा कि हर्ष का विषय है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी आगामी 25 दिसम्बर को छतरपुर में केन-बेतवा लिंक राष्ट्रीय परियोजना का शिलान्यास करने आ रहे हैं। साथ ही फरवरी-2025 में भोपाल में होने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में भी प्रधानमंत्री श्री मोदी पधारेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मीडिया प्रतिनिधियों के साथ प्रदेश में एक वर्ष में हुए विकास और उपलब्धियों को साझा किया।

मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान और जनकल्याण पर्व

प्रदेश में 11 दिसम्बर से मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान और राज्य सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर जनकल्याण पर्व शुरू किया गया है। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान में शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं से वंचित नागरिकों को लाभान्वित करने और जन समस्याओं का मौके पर शिविर लगाकर निराकरण किया जायेगा। इसमें केन्द्र और राज्य सरकार की शत-प्रतिशत सैचुरेशन की चिन्हित-34 हितग्राही मूलक योजनाओं में और 11 लक्ष्य आधारित योजनाओं के साथ विभिन्न विभागों से संबंधित 63 सेवाएं शिविर लगाकर आमजन को लाभान्वित किया जाएगा।

जन-कल्याण पर्व में विभिन्न विभागों की गतिविधियां, विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमि-पूजन के साथ जन-कल्याण के कार्य प्रमुखता से किये जायेंगे होंगे। इन कार्यक्रमों में आमजन की सहभागिता भी सुनिश्चित की जाएगी।

किसान कल्याण

प्रत्येक ग्राम पंचायत में पीएम किसान समृद्धि केंद्र की स्थापना होगी।

- रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना में किसानों को 1 हजार रुपये प्रति क्विंटल की दर से अधिकतम 3900 रूपये प्रति हेक्टेयर की अतिरिक्त सहायता दी जाएगी।
- किसानों को समर्थन मूल्य पर उपार्जित गेहूं पर प्रति क्विंटल 125 रुपये बोनस का भुगतान।
- सोयाबीन का समर्थन मूल्य 4,892 रुपये प्रति क्विंटल की दर से उपार्जन करने का निर्णय लिया।
- मुख्यमंत्री किसान कल्याण सम्मान निधि में 6 हजार रूपये प्रति वर्ष का भुगतान सीधे किसानों के खातों में किया जा रहा है।
- फसल की बोनी के सही आंकलन के लिये डिजिटल क्राप योजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है।
- राजस्व महाअभियान के दो चरणों में 80 लाख से अधिक लंबित प्रकरणों का निपटारा किया गया। राजस्व महाअभियान 3.0 शुरू हुआ।

गौ-संरक्षण एवं संवर्धन

साल 2024 को गौवंश रक्षा वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

- दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के बीच एमओयू हुआ।
- 10 से ज्यादा गाय पालने पर सरकार द्वारा अनुदान देने का निर्णय।
- गौ-वंश के लिए बेहतर आहार हेतु प्रति गौ-वंश मिलने वाली 20 रुपये की राशि बढ़ाकर 40 रुपये करने का निर्णय।
- प्रत्येक 50 किमी पर घायल गायों के इलाज के लिए हाइड्रोलिक कैटल लिफ्टिंग वाहन का प्रबंध।

सिंचाई का बढ़ता रकबा

- 1320 करोड़ रुपये की लागत की चितरंगी दाबयुक्त सूक्ष्म सिंचाई परियोजना को स्वीकृति। सिंगरौली जिले में परियोजना से 32 हजार 125 हेक्टेयर में सिंचाई क्षेत्र विकसित होगा।
- 4 हजार 197 करोड़ 58 लाख रुपये की लागत से जावद-नीमच दाबयुक्त सूक्ष्म सिंचाई परियोजना को स्वीकृति।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

सोंडवा माइक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना से मिलेगा भरपूर पानी

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सोंडवा माइक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना क्षेत्र में सिंचाई के लिये महत्वपूर्ण साबित होगी। इससे किसानों को सिंचाई के लिये पर्याप्त जल मिलेगा। छकतला में हीरा पॉलिसिंग एवं कटिंग का कार्य होने से क्षेत्र के युवाओं को रोजगार के अवसर मिलेंगे। इससे अन्य क्षेत्रों में रोजगार के लिये होने वाला पलायन भी रूकेगा।

उन्होंने कहा कि सोंडवा क्षेत्र के 169 गाँवों के लिये शीघ्र ही नर्मदा जल भी उपलब्ध होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव अलीराजपुर जिले के छकतला में 1732.45 करोड़ की लागत की सोंडवा माइक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना के भूमि-पूजन समारोह को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सोंडवा सिंचाई परियोजना से क्षेत्र को एक से अधिक उपज देने में मदद मिलेगी। जिससे आर्थिक सशक्तिकरण के द्वार खुलेंगे। रोजगार की तलाश में अन्य क्षेत्रों में होने वाले पलायन को रोकने में भी इस परियोजना से मदद मिलेगी। सोंडवा परियोजना से पानी की कमी की समस्या भी दूर होगी। छकतला में 15.14 करोड़ रूपये छकतला हीरा पॉलिसिंग एवं कटिंग कार्य की परियोजना का भूमिपूजन किया गया है। इससे भी युवाओं के लिये रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सोंडवा माइक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना से जिले के 169 गांव की 55013 हेक्टेयर भूमि सिंचित होगी। इससे आर्थिक समृद्धि भी आएगी, आमजन का जीवन सुधरेगा, लोगों जीने का अंदाज बदलेगा और आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अलीराजपुर कलेक्टर को बिजली की आवश्यकता का सर्वे का प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि प्रतिवेदन की समीक्षा कर आवश्यकता अनुसार बिजली उपलब्ध कराया जाना सुनिश्चित किया जाएगा।

125 लाख हेक्टेयर में रबी बुवाई पूरी

सबसे अधिक 82 लाख हेक्टेयर में गेहूं की बुवाई

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। प्रदेश में रबी फसलों की बुवाई अंतिम चरण में चल रही है। अभी तक 124.80 लाख हेक्टेयर में रबी फसलों की बुवाई पूरी हो चुकी है जो समान अवधि में गत वर्ष की बुवाई 123.56 लाख हेक्टेयर से अधिक है। चालू रबी सीजन में 140.08 लाख हेक्टेयर में रबी बुवाई का लक्ष्य रखा गया है। कृषि संचालनालय से प्राप्त जानकारी अनुसार सबसे अधिक 81.60 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया है। गत वर्ष समान अवधि में 75.43 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया था।

इस वर्ष 91.86 लाख हेक्टेयर में गेहूं की बुवाई प्रस्तावित है। जौ की बुवाई 41 हजार हेक्टेयर में की गई है जबकि गत वर्ष समान अवधि के 52 हजार हेक्टेयर में जौ बोया गया था। चना की बुवाई पिछले वर्ष की अपेक्षा कम हुई है। समान अवधि में चना की बुवाई 21.87 लाख हेक्टेयर के विरुद्ध इस वर्ष 19.21 लाख हेक्टेयर में हुई है। मटर की बुवाई 2.40 लाख हेक्टेयर में हुई है जो गत वर्ष की बुवाई 2.65 लाख हेक्टेयर से कम है। मसूर 7.31 लाख हेक्टेयर में बोयी गई है। पिछले साल समान अवधि में 7.43 लाख हेक्टेयर में मसूर की बुवाई हुई थी।

प्रमुख तिलहनी फसल राई-सरसों 12.16 लाख हेक्टेयर में बोयी गई है। पिछले साल यह बुवाई 13.68 लाख हेक्टेयर में की गई थी। चालू रबी सीजन में 14.61 लाख हेक्टेयर में सरसों की बुवाई प्रस्तावित है। अलसी की बुवाई 1.02 लाख हेक्टेयर में की गई है जो पिछले साल की बुवाई 1.19 लाख हेक्टेयर से कम है। गन्ना की बुवाई 69 हजार हेक्टेयर में की गई है। पिछले साल समान अवधि में 79 हजार हेक्टेयर में गन्ना बोया गया था। वर्तमान में धान उत्पादक क्षेत्रों में गेहूं एवं अन्य फसलों की बुवाई शीघ्रता से की जा रही है। रबी फसलों की स्थिति संतोषजनक है।

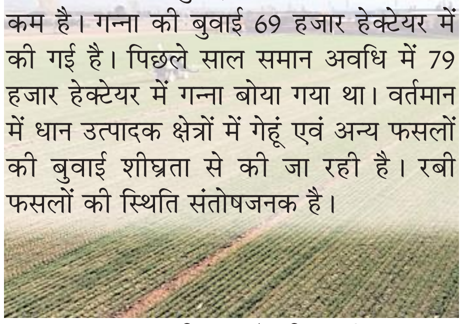

प्रमुख रबी फसलों की बुवाई

फसल	लक्ष्य 24-25	बोनी 24-25	गत वर्ष की बोनी
गेहूं	91.86	81.60	75.43
जौ	0.36	9.41	0.52
चना	20.25	19.21	21.87
मटर	2.67	2.40	2.65
मसूर	7.92	7.31	7.43
राई सरसों	14.61	12.16	13.68
अलसी	1.07	1.02	1.19
गन्ना	1.07	0.69	0.79
रबी योग	140.08	124.80	123.56

(क्षेत्र-लाख हेक्टेयर में)

गौधन के बगैर खेती संभव नहीं : डॉ. यादव

भोपाल। भगवान श्रीकृष्ण के आदर्शों पर चलकर ही गांवों का विकास हो सकता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गौपालन को प्रोत्साहन दिया था और गौधन के बगैर खेती का कार्य संभव नहीं है। गौपालन हमारी पुरातन संस्कृति रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव खरगोन जिले की कसरावद तहसील के ग्राम लेपा में निमाड़ अभ्युदय संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय ग्रामीण प्रौद्योगिकी राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने माकड़खेड़ा से पीपलगोन रोड पर टिगरियाव से बम्हनगांव के बीच वेदा नदी पर पुल बनाने की घोषणा की।

धान मिलिंग पर प्रोत्साहन राशि बढ़ी

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में संपन्न मंत्रिपरिषद की बैठक खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 में प्रदेश में उपार्जित धान की मिलिंग के लिए दी जाने वाली प्रोत्साहन और अपग्रेडेशन राशि की स्वीकृति दी गई। निर्णय अनुसार मिलिंग राशि 10 रुपये प्रति क्विंटल और प्रोत्साहन राशि 50 रुपये प्रति क्विंटल प्रदाय की जायेगी। साथ ही 20 प्रतिशत परिदान एफ.सी.आई को करने पर 40 रुपये और 40 प्रतिशत परिदान एफ.सी.आइ को करने पर 120 रुपयेपये प्रति क्विंटल अपग्रेडेशन राशि प्रदाय की जायेगी। इससे किसानों से उपार्जित धान की मिलिंग में तेजी आयेगी।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली एवं अन्य कल्याणकारी योजनाओं अंतर्गत चावल की आपूर्ति सुनिश्चित किये जाने के साथ राज्य की आवश्यकता के अतिरिक्त अतिशेष चावल की मात्रा को केंद्रीय पूल में त्वरित गति से परिदान किया जायेगा।

पशुपालन से बढ़ेगी किसानों की आय: श्री पटेल

भोपाल। पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री लखन पटेल ने कहा है कि किसान की आय दोगुना करने में पशुपालन का विशेष योगदान है। मुख्यमंत्री पशुपालन विकास योजना सहित अन्य विभागीय योजनाओं में पशुपालन गतिविधियों में किसानों को लगभग 50 प्रतिशत अनुदान विभाग द्वारा दिया जाता है। विभागीय अधिकारी किसानों को पशुपालन के लिए प्रेरित करें और उनको शासन की योजनाओं का पूरा लाभ दें। मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान के दौरान पशुपालन शिविर लगाया जाएं और पशुपालन योजनाओं के अधिक से अधिक प्रकरण स्वीकृत किए जाएं। श्री पटेल ने पशुपालन संचालनालय के सभागार में विभाग की प्रदेश स्तरीय समीक्षा बैठक ली। बैठक में प्रमुख सचिव पशुपालन उमाकांत उमराव, संचालक पशुपालन सहित सभी संभागों के संयुक्त संचालक एवं अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

पशुपालन विभाग की समीक्षा बैठक

श्री पटेल ने निर्देश दिए कि राष्ट्रीय पशुधन मिशन के अंतर्गत पशुपालकों को कुक्कुट पालन, बकरी पालन, शूकर पालन और चरी/चारा उत्पादन के लिए प्रेरित किया जाए। बड़े शहरों में कड़कनाथ विक्रय से पशुपालक किसानों को अच्छा मुनाफा प्राप्त हो सकता है। महिला स्व-सहायता समूह को राष्ट्रीय पशुधन मिशन की गतिविधियों से जोड़ा जाए। योजना अंतर्गत स्व सहायता समूह को कुक्कुट पालन के लिए कई यूनिट प्रदाय की जाए। केंद्र सरकार को एक यूनिट में 100 कुक्कुट प्रदाय करने का प्रस्ताव भिजवाया जाए। वर्तमान में एक यूनिट में 40 कुक्कुट प्रदाय किए जाते हैं।

श्री पटेल ने कहा कि पशुपालक किसानों को साइलेज के इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया जाए। भूसे की तुलना में साइलेज पशुओं के लिए अधिक पौष्टिक होता है, पशु में दूध की मात्रा बढ़ता है और इसकी कीमत भी कम होती है।

यह मक्के की चारी और नेपियर घास से बनता है। किसान चरी/चारा उत्पादन कर अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। चरी/चारा उत्पादन योजना में शासन की ओर से 50% अनुदान है। प्रमुख सचिव पशुपालन श्री उमराव ने कहा कि अधिकारी पशु बीमा के लंबित प्रकरणों का बीमा अधिकारियों से निरंतर संपर्क कर निराकरण कराएं। यदि संबंधित बीमा कंपनियां बेवजह किसानों के बीमा दावे रोकती हैं तो उपभोक्ता फोरम में प्रकरण दर्ज कराएं।

कृषि के बिना देश आगे नहीं बढ़ सकता : श्री चौहान

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण व ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि बिना खेती के वैभवशाली व गौरवशाली भारत नहीं बन सकता है। कृषि आज भी भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और किसान उसकी आत्मा हैं। कृषि के बिना देश आगे नहीं बढ़ सकता है। खाद्य सुरक्षा के लिए व जीवित रहने के लिए कृषि आवश्यक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में ये संकल्प है कि भारत को दुनिया की फूड बॉस्केट बनाकर ही चैन लेंगे, उसके लिए 6 सूत्रीय रणनीति है। निवेशकों से कहना चाहता हूं कि कृषि के बिना समृद्धि नहीं आती है। किसान सबसे बड़ा उत्पादक भी है और सबसे बड़ा उपभोक्ता भी है। कृषि केंद्र बिन्दू है और कृषि को आगे बढ़ाने के लिए आप उसमें निवेश की संभावनायें ढूंढ लें। श्री चौहान राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 को संबोधित कर रहे थे।

श्री चौहान ने कहा कि 6 सूत्रीय रणनीति में सबसे पहले उत्पादन बढ़ाना है। उत्पादन बढ़ाने के लिए अच्छे बीज होना आवश्यक है। 18 से 22 प्रतिशत कृषि दर पानी से ही प्राप्त कर सकते हैं। नई कृषि की पद्धतियां यानि यंत्रीकरण खेती को भी हम बढ़ावा दे रहे हैं। यंत्रीकरण खेती में जो भी उपकरण लगते हैं उनमें ज्यादा निवेश करना होगा। खेती की उत्पादन की लागत को कम करने पर पूरा ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। श्री चौहान ने कहा कि हमारा प्रयास है कि किसानों को कम ब्याज पर आसानी से ऋण मिल जाये। अनावश्यक खाद/फर्टिलाइजर का उपयोग कम करने का प्रयत्न भी किया जा रहा है। श्री चौहान ने कहा कि हम प्रयास कर रहे हैं कि किसानों को उत्पादन के उचित दाम मिले। उसके लिए अलग-अलग फसलों को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदते हैं। आवश्यकता के अनुसार नीतिगत बदलाव भी करते हैं। उन्होंने कहा कि किसान और इन्डस्ट्री के भले के लिए पाम ऑयल पर साढ़े 7 प्रतिशत आयात शुल्क लगाया ताकि यहां की इन्डस्ट्री आगे बढ़ सके और किसान को ठीक दाम मिल सके। ऐसे ही प्याज के दाम कम होने पर निर्यात शुल्क 40 प्रतिशत से घटाकर 20 प्रतिशत किया। राइस इन्डस्ट्री को ठीक करने के लिए न्यूनतम निर्यात शुल्क कम कर निर्यात की सुविधा दी। श्री चौहान ने कहा कि जहां आवश्यकता होगी जब आयात-निर्यात नीति में भी बदलाव करेंगे।

493 लाख हेक्टेयर से अधिक रबी बुवाई

गेहूं की बुवाई 239 लाख हेक्टेयर के पार

नई दिल्ली। रबी फसलों की बुवाई इस वर्ष तेजी से बढ़ी है। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अनुसार 9 दिसंबर 2024 तक कुल बुवाई क्षेत्र 493.62 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है। यह आंकड़ा पिछले वर्ष के 486.30 लाख हेक्टेयर की तुलना में अधिक है।

रबी सीजन में गेहूं, दलहन, श्रीअन्न और तिलहन प्रमुख फसलों के तहत क्षेत्र कवरेज में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। इस वर्ष गेहूं की बुवाई 239.49 लाख हेक्टेयर भूमि पर की गई है, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में यह क्षेत्रफल 234.15 लाख हेक्टेयर था और इस वर्ष धान की बुवाई 11.19 लाख हेक्टेयर भूमि पर की गई है, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में यह क्षेत्रफल 10.93 लाख हेक्टेयर था। दलहन फसलों का कुल बुवाई क्षेत्र 120.65 लाख हेक्टेयर है, जो पिछले वर्ष 115.70 लाख हेक्टेयर था। दलहन की प्रमुख फसल चना इस बार 86.09 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बोया गया, जबकि पिछले वर्ष यह 80.35 लाख हेक्टेयर था। मसूर की बुवाई इस वर्ष 14.75 लाख हेक्टेयर में हुई, जो पिछले वर्ष के 14.50 लाख हेक्टेयर से अधिक है। इसके अतिरिक्त, अन्य दलहनों की बुआई में भी मामूली वृद्धि देखी गई। श्री अन्न (जैसे ज्वार, बाजरा और रागी) और मोटे अनाजों का कुल बुआई क्षेत्र 35.77 लाख हेक्टेयर रहा। यह पिछले वर्ष के 35.08 लाख हेक्टेयर से अधिक है। ज्वार की खेती इस वर्ष 19.38 लाख हेक्टेयर में हुई, जो पिछले वर्ष 18.32 लाख हेक्टेयर थी। मक्का की बुआई 10.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में हुई, जबकि पिछले वर्ष यह 10.05 लाख हेक्टेयर थी। तिलहन फसलों का क्षेत्र 86.52 लाख हेक्टेयर रहा, जो पिछले वर्ष के 90.45 लाख हेक्टेयर से कम है। इसमें भी रेपसीड और सरसों की खेती प्रमुख रहती है, जिसकी बुआई इस वर्ष 81.07 लाख हेक्टेयर में हुई, जो पिछले वर्ष 84.70 लाख हेक्टेयर थी।

फसलें	सामान्य क्षेत्र	बोनी 24-25	बोनी 23-24
गेहूँ	312.35	239.49	234.15
चावल	42.02	11.19	10.93
दालें	140.44	120.65	115.70
चना	100.99	86.09	80.35
मसूर	15.13	14.75	14.50
मटर	6.50	8.09	8.14
कुल्थी	1.98	2.42	3.06
उड़द	6.15	2.91	3.41
मूंग	1.44	0.36	0.72
लैथिरस	2.79	2.65	2.90
अन्य दालें	5.46	3.36	2.62
श्रीअन्न	53.82	35.77	35.08
ज्वार	24.37	19.38	18.32
बाजरा	0.92	0.10	0.11
रागी	0.68	0.45	0.45
मक्का	22.11	10.07	10.05
जौ	5.63	5.65	6.14
तिलहन	86.97	86.52	90.45
रेपसीड-सरसों	79.16	81.07	84.70
मूंगफली	3.82	2.31	2.51
कुसुम	0.72	0.52	0.49
सूरजमुखी	0.76	0.27	0.21
तिल	0.58	0.06	0.11
अलसी	1.93	2.11	2.27
अन्य तिलहन	0.00	0.17	0.16
कुल	635.60	493.62	486.30

(क्षेत्रफल- लाख हेक्टेयर में)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

साप्ताहिक सुविचार

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता। – चाणक्य

धान खरीदी में पारदर्शिता जरूरी

कृषक दूत सम्पादकीय

प्रदेश में इस समय न्यूनतम समर्थन मूल्य पर धान की खरीद किसानों से की जा रही है। लगभग 1190 खरीद केन्द्रों पर 2300 रुपये प्रति क्विंटल के भाव किसानों का धान खरीदा जा रहा है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी धान की सरकारी खरीद अव्यवस्था से परिपूर्ण है। खरीदी केन्द्रों पर अपर्याप्त प्रबंधन के कारण किसानों को परेशान होना पड़ रहा है। धान खरीद में लगे विभागीय कर्मचारियों के असहयोग के कारण किसानों को परेशान होते देखा जा सकता है। कहीं पर तुलाई श्रमिकों की कमी तो कहीं पर वारदानों के अभाव से किसान परेशान हैं। धान की गुणवत्ता को भी लेकर आए दिन बवाल होना आम बात है। एफएक्यू, धान की गुणवत्ताहीन बताकर किसानों को परेशान करना कोई नयी बात नहीं है। धान की नमी का स्तर भी किसानों की परेशानी का कारण है। धान खरीदी केन्द्रों को राज्य सरकार के स्पष्ट निर्देश होने के बावजूद भी किसानों को परेशान करना समझ से परे है। जो किसान दिसंबर प्रथम सप्ताह में धान की तुलाई करा चुके हैं उन्हें अभी तक भुगतान नहीं मिल पाया है। धान खरीदी केन्द्रों पर सबसे बड़ी अव्यवस्था व्यापारियों के धान की है। समितियों एवं खरीदी केन्द्र के प्रबंधकों की मिली भगत से व्यापारियों का धान सुगमता से खरीदा जा रहा है जबकि इसी काम के लिये किसानों को परेशान होना पड़ रहा है। कई जिला कलेक्टर्स ने धान खरीदी केन्द्रों के निरीक्षण के दौरान किसानों द्वारा की गई शिकायत को सही पाया है। किसानों की अथक मेहनत एवं चार महीनों के इंतजार के पश्चात प्राप्त धान रुपी 'श्री फल' किसानों के लिये अत्यधिक महत्व रखता है। वर्तमान में 15 से 20 हजार रुपये प्रति एकड़ लागत लगाने के पश्चात धान पैदा होता है। सरकार का यह प्रयास होना चाहिये कि किसानों की शत-प्रतिशत धान की खरीद की जाए। इस वर्ष प्रति एकड़ धान खरीद की सीमा भी कम रखी गई है। इसे कम से कम 25 क्विंटल प्रति एकड़ किया जाना चाहिए। किसानों द्वारा उन्नत तकनीकी के प्रयोग से धान की खेती करके वर्तमान में 30 से 35 क्विंटल प्रति एकड़ तक धान उत्पादित किया जा रहा है। अन्न उत्पादन में लग रही लागत एवं किसानों की मेहनत को देखते हुए सभी खाद्यान्न न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी जाने चाहिए। किसानों के सशक्तीकरण से ही देश आत्मनिर्भर होगा।

रावे छात्राओं ने सीखा कृषि कार्य अनुभव

सिवनी। कृषि विज्ञान केंद्र सिवनी के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डा. शेखर सिंह बघेल ने जानकारी देते हुये बताया कि ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव प्राप्त करने आयीं महाविद्यालय जबलपुर से 23 एवं बालाघाट से 10 छात्राओं ने 6 माह तक केन्द्र के कृषि वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में ग्राम सिमरिया, फरेदा, बम्होडी और छिडिया पलारी में कृषकों के साथ कृषि से संबंधित हर विधा पर व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त किया।

केंद्र के रावे प्रभारी डॉ. के.के. देशमुख ने कहा कि छात्राओं को केंद्र में रोजाना कृषि विज्ञान केंद्र से संबंधित विभिन्न विषयों में व्याख्यान दिये गए साथ ही छात्राओं ने गांव में कृषकों के खेतों में जाकर उनके साथ कृषि के कार्यों का विस्तार से जानकारी व देखा, करो सीखों मूलमंत्र पर कार्य किया।

रावे छात्राओं ने दैनिक रूप से कृषकों के खेतों में फसल की पहचान, किस्मों की जानकारी, मृदा की जांच, फसलों में लगने वाले कीट-व्याधियों की पहचान, रोकथाम की जानकारी साथ ही कृषि में नवाचार व नवीन तकनीकी को जाना। गांव में रासायनिक सरोकार से जुड़े कार्यों को किया एवं कृषकों को जागरूक करने हेतु अहम भूमिका निभाई। इस दौरान कृषि महाविद्यालय बालाघाट के सहायक प्राध्यापक डॉ. ऋषिकेश ठाकुर, डॉ. सुरेंद्र कुमार राय एवं कृषि विज्ञान केंद्र, सिवनी के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. शेखर सिंह बघेल, डॉ. के.के. देशमुख, डॉ. निखिल सिंह, डॉ. आर.एस. ठाकुर, डॉ. जी.के. राणा, इंजी. कुमार सोनी, प्रिया चैकसे, आभा श्रीवास्तव, देवी प्रसाद तिवारी, शुभम झारिया, हिमांशु कुमारे उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों ने सीखे आधुनिक खेती के तरीके

डिंडोरी। सरस्वती विद्यालय डिंडौरी के कक्षा 11वी एवं 12वीं कृषि विज्ञान के विद्यार्थियों ने कृषि विज्ञान केंद्र डिंडोरी का भ्रमण किया। जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर से संबद्ध कृषि विज्ञान केंद्र जाकर विद्यार्थियों ने आधुनिक कृषि के तरीके जाने। कार्यक्रम डॉ. पी.एल. अम्बुलकर के मार्गदर्शन एवं डॉ. गीता सिंह के नेतृत्व में संपन्न हुआ।

डॉ. अंबुलकर ने केंद्र की गतिविधियों की जानकारी दी। डॉ. गीता सिंह ने बताया कि वर्तमान में आईसीएआर पूसा नई दिल्ली एवं पीएटी के माध्यम बीएससी कृषि में प्रवेश परीक्षा में प्राप्त मैरिट अनुसार चयन होता है। कृषि विज्ञान में वर्तमान में अनेक अवसर प्राप्त होते हैं, जिसमे कृषि वैज्ञानिक, कृषि अनुसंधान, महाविद्यालय में शिक्षक, बैंक अधिकारी, मल्टीनेशनल कंपनी में भी अच्छे पैकेज में जॉब उपलब्ध है। कृषि विज्ञान का अध्ययन करके आधुनिक खेती करके सफल किसान बन सकते हैं। अवधेश कुमार पटेल ने बीजों के प्रकार एवं सर्टिफाइड बीजों की उपयोगिता बताई।

विद्यार्थियों ने टेक्निकल पार्क जाकर सब्जियों की नई किस्म धनिया सिम्बा, मैथी गोल्डन पर्ल, टमाटर काशी आदर्श एवं बैगन काशी उत्सव की नर्सरी को देखा एवं प्रति एकड़ उत्पादन को जाना। श्वेता मसराम ने विद्यार्थियों को उर्वरकों के उपयोग एवं प्रत्येक 3 वर्ष में मिट्टी की जाँच को अनिवार्य कराने के विषय में बताया गया।

फसल प्रबंधन ही बेहतर उत्पादन का सूत्र

ग्वालियर। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत निदेशक विस्तार सेवायें के सभागार में वार्षिक कार्य योजना कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें 22 कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रमुख वैज्ञानिक शामिल हुये। कार्यक्रम में निदेशक अनुसंधान सेवायें ने कहा कि आज कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा की जा रही यह कार्यशाला उनके द्वारा भविष्य में किसान हितैषी व नवीन तकनीकों की रूपरेखा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए निदेशक विस्तार सेवायें डॉ. वाय.पी. सिंह ने कहा कि हमारे कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों व विश्वविद्यालय के हित में चौबीसों घंटे दिन-प्रतिदिन कार्य करते रहते है, जो सराहनीय है। आज खेती से हमें उतनी आय प्राप्त नहीं हो रही है जितनी प्राप्त होनी चाहिए इसलिए हमें कार्ययोजना को प्रबल एवं उस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। जो कृषि उत्पादकता को बेहतर बनाने का प्रयास करे। क्योंकि की फसल प्रबंधन ही बेहतर उत्पादन की गारंटी है। रबी मौसम में इस वक्त बोयनी का कार्य चल रहा है। इस अवसर पर बीज और खाद का प्रबन्धन जरूरी है। कार्यक्रम में आई.सी.ए.आर. अटारी झोन जबलपुर से डॉ. ए.ए. राउत उपस्थित रहे एवं वर्चुअली रूप से निदेशक अटारी डॉ. एस.आर.के. सिंह जुड़े। साथ ही डॉ. वाय.डी. मिश्रा, डॉ. अखिलेश सिंह, डॉ. आर.सी. आसवानी तथा विभिन्न विज्ञान केन्द्रों के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख भी मौजूद रहे।

अनमोल वचन

सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ हो। – स्वामी शंकराचार्य

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

पौष कृष्ण पक्ष विक्रम संवत 2081 ईस्वी सन् 2024

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
17 दिसम्बर 24	मंगलवार	पौष कृष्ण-02	
18 दिसम्बर 24	बुधवार	पौष कृष्ण-03	
19 दिसम्बर 24	गुरुवार	पौष कृष्ण-04	
20 दिसम्बर 24	शुक्रवार	पौष कृष्ण-05	
21 दिसम्बर 24	शनिवार	पौष कृष्ण-06	
22 दिसम्बर 24	रविवार	पौष कृष्ण-07	
23 दिसम्बर 24	सोमवार	पौष कृष्ण-08	
24 दिसम्बर 24	मंगलवार	पौष कृष्ण-09	
25 दिसम्बर 24	बुधवार	पौष कृष्ण-10	क्रिसमस
26 दिसम्बर 24	गुरुवार	पौष कृष्ण-11	सफला एकादशी
27 दिसम्बर 24	शुक्रवार	पौष कृष्ण-12	
28 दिसम्बर 24	शनिवार	पौष कृष्ण-13	प्रदोष व्रत
29 दिसम्बर 24	रविवार	पौष कृष्ण-14	
30 दिसम्बर 24	सोमवार	पौष कृष्ण-30	अमावस्या

मसूर की उन्नत उत्पादन तकनीकी

★ संदीप कुमार शर्मा (कृषि मौसम वैज्ञानिक)
★ डॉ. अजय कुमार पांडेय (प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख)
जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय
कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा (म.प्र.)

मध्यप्रदेश में मसूर का दलहनी फसल के रूप में महत्वपूर्ण स्थान है। इसका क्षेत्रफल 6.2 लाख हेक्टेयर, उत्पादन 2.3 लाख टन एवं उत्पादकता 371 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। मध्यप्रदेश में मुख्य रूप से विदिशा, सागर, रायसेन, दमोह, जबलपुर, सतना, पन्ना, रीवा, नरसिंहपुर, सीहोर एवं अशोकनगर जिलों में इसकी खेती की जाती है। अशोकनगर जिले में मसूर की खेती रबी मौसम में 0.28 लाख हेक्टेयर में की जा रही है। उत्पादन 0.19 लाख टन एवं उत्पादकता 701 किग्रा प्रति हेक्टेयर है।

उन्नतशील प्रजातियां

प्रजातियां	उत्पादन	अवधि	स्थान एवं वर्ष
जे.एल-3	11.14	112-118 दिन	1999 जनेकृविवि
जे.एल.1	12.15	112-118 दिन	1979 जनेकृविवि
आईपीएल-81	12.14	112-118 दिन	1993
पंत एल-209	11.13	110-115 दिन	2000 जीबीपीयूएटी पंतनगर
एल.-4594	12.14	112-118 दिन	2006 पूसा नई दिल्ली
वीएल.-मसूर 4	12.15	115-118 दिन	1991 व्हीपीकेएएस अल्मोडा

उकटा प्रतिरोधी किस्में

पीएल-02, वीएल मसूर-129, वीएल-133, 154, 125, पंत मसूर (पीएल-063), केएलबी-303, पूसा वैभव (एल-4147), आवी.एल.-31, 316।

छोटे दाने वाली प्रजातियां

पंत मसूर-4, पूसा वैभव, पंत मसूर-406, आपीएल-406, पंत मसूर-639, डीपीएल-32, पीएल-5, पीए-6, डब्लूबीएल-77।

बड़े दाने वाली प्रजातियां

डीपीएल-62, सुभ्रता, जेएल-3, नूरी (आईपीएल-81), पीएल-5, एलएच 84-6, डीपीएल-15, (प्रिया), लेन्स-4076, जेएल-1, आईपीएल-316, आईपीएल-406, पीएल-7।

उपज अन्तर

सामान्यत: यह देखा गया है कि अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन की पैदावार व स्थानीय किस्मों की उपज में लगभग 31% का अन्तर है। यह अन्तर कम करने के लिये अनुसंधान संस्थानों व कृषि विज्ञान केन्द्र की अनुशंसा के अनुसार उन्नत कृषि तकनीक को अपनाना चाहिए।

जलवायु : मसूर एक दीर्घ दीसिकाली पौधा है। इसकी खेती उपोष्ण जलवायु के क्षेत्रों में जाड़े के मौसम में की जाती है।

भूमि एवं खेत की तैयारी

- मसूर की खेती प्राय: सभी प्रकार की भूमियों में की जाती है। किन्तु दोमट एवं बलुअर दोमट भूमि सर्वोत्तम होती है। जल निकास की उचित व्यवस्था वाली काली मिट्टी, मटियार मिट्टी एवं लैटराइट मिट्टी में इसकी अच्छी खेती की जा सकती है। हल्की अम्लीय (4.5.8.2 पीएच) की भूमियों में मसूर की खेती की जा सकती है। परन्तु उदासीन, गहरी मध्यम संरचना, सामान्य जलधारण क्षमता की जीवांश पदार्थयुक्त भूमियां सर्वोत्तम होती हैं।

बीज एवं बुआई

- सामान्यत: बीज की मात्रा 40 किग्रा प्रति हेक्टेयर क्षेत्र में बोनी के लिये पर्याप्त होती है। बीज का आकार छोटा होने पर यह मात्रा 35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होनी चाहियें। बड़े दानों वाली किस्मों के लिये 50 किग्रा प्रति हेक्टेयर उपयोंग करें।
- सामान्य समय में बोआई के लिये कतार से कतार की दूरी 30 सेंमी रखना चाहियें। देरी से बुआई के लिये कतारों की दूरी कम कर 20-25 सेंमी कर देना चाहियें एवं बीज को 5-6 सेंमी की गहराई पर उपयुक्त होती है।

बीजोपचार

नये क्षेत्रों में बुआई करने पर बीज को राइजोबियम के प्रभावशाली स्ट्रेन से उपचारित करने पर 10 से 15% की उपज वृद्धि होती है। 10 किग्रा मसूर के बीज के लिए राइजोबियम कल्चर का एक पैकेट पर्याप्त होता है। 100 ग्राम गुड़ को 1 लीटर पानी में घोलकर उबाल लें। घोल के ठंडा होने पर उसमें राइजोबियम कल्चर मिला दें। इस कल्चर में 10 किग्रा बीज डाल कर अच्छी प्रकार मिला लें ताकि प्रत्येक बीज पर कल्चर का लेप चिपक जायें।

उपचारित बीज को कभी भी धूप में न सुखायें व बीज उपचार दोपहर के बाद करें। राइजोबियम कल्चर न मिलने की स्थिति में उस खेत से जहां पिछले वर्ष मसूर की खेती की गयी हो 100 से 200 किग्रा मिट्टी खुरचकर बुआई के पूर्व खेत में मिला देने से राइजोबियम बैक्टेरिया खेत में प्रवेश कर जाता है और अधिक वातावरणीय नत्रजन का स्थिरीकरण होने से उपज में वृद्धि होती है। ताल क्षेत्र में राइजोबियम उपचार की आवश्यकता कम रहती है।

बीज शोधन

बीज जनित फफूंदी रोगों से बचाव के लिए थीरम एवं कार्बेन्डाजिम (2:1) से 3 ग्राम अथवा थीरम 3.0 ग्राम अथवा कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित कर लें। तत्पश्चात कीटों से बचाव के लिए बीजों को क्लोरोपाइरीफास 20 ईसी, 8 मिली प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित कर लें।

बुआई का समय

सामान्यत: मसूर 1 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक बोई जाती है। इसका बोने का समय क्षेत्र विशेष जलवायु अनुसार भिन्न हो सकता है। जैसे उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में बुवाई का सर्वोत्तम समय अक्टूबर के अंत में, जबकि उत्तर-पर्वी मैदानी क्षेत्र में नवम्बर का द्वितीय पखवाडा उपयक्त होता है। क्योंकि इस समय यहाँ पर्याप्त नमी बुवाई के समय होती है।

पौषक तत्व प्रबंधन

- मृदा की उर्वरता एवं उत्पादन के लिये उपलब्ध होने पर 15 टन अच्छी सड़ी गोबर की खाद व 20 किग्रा नत्रजन तथा 50 किग्रा स्फुर प्रति हेक्टेयर एवं 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर पोटाश का प्रयोग करना चाहिये।

बुआई विधि

बुआई देशी हल/सीड ड्रिल से पंक्तियों में करें। सामान्य दशा में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी व देर से बुआई की स्थिति में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 सेमी ही रखें पौधे से पौधे की बीच की दूरी 5 सेमी रखे। बीज उथला (3-4 सेमी) बनाना चाहिए। उतेरा विधि से बोआई करने हेतु कटाई से पूर्व ही धान की खड़ी फसल में अंतिम सिंचाई के बाद बीज छिटक कर बुआई कर देते हैं।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

सिंचाई पम्पों के प्रकार एवं आवश्यक सावधानियां

★ कैलाश चन्द्र महाजन
सहायक प्राध्यापक
कृषि महाविद्यालय जनेकृविवि, गंजबासौदा, विदिशा (म.प्र.)
★ डॉ. देवेंद्र कुमार वर्मा
सहायक प्राध्यापक
कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, जनेकृविवि, जबलपुर (म.प्र.)

फसलों के लिये उचित मात्रा में पानी देना आवश्यक होता है जिससे कि फसलों की उचित बढ़वार हो। कुयें, ट्यूबवेल, तालाब, जलधार एवं नदियों से पानी उठाने के लिये पम्प सबसे अच्छा एवं प्रभावशाली साधन माना गया है। पम्प खरीदते समय उसकी अच्छी गुणवत्ता के साथ-साथ उसके इस्तेमाल एवं संचालन में भी कई बातों एवं सावधानियां बरतने पर ध्यान देने की जरूरत पड़ती है।

सिंचाई हेतु पम्पों के प्रकार

सिंचाई में आमतौर पर जो पंप प्रयुक्त किये जाते हैं उनके सेन्ट्रीफ्यूगल पंप या विकेन्द्रीय पंप, सबमर्सिबल पंप, प्रोपेलर पंप एवं रेसीप्रोकेटिंग पंप प्रमुख हैं।

- सेन्ट्रीफ्यूगल पंप या विकेन्द्रीय पंप लगभग 10 मीटर गहराई से पानी उठा सकता है। यह पंप अपनी साधारण बनावट, कम कीमत, स्थिर एवं लगातार पानी फेंकने के कारण किसानों के बीच में काफी लोकप्रिय है।
- सबमर्सिबल पंप लगभग 75-90 मीटर गहराई से पानी उठा सकता है तथा इसमें रिपेयर या मेंटेनेंस की आवश्यकता बहुत कम लगभग नहीं के बराबर होती है। इस पंप में मोटर हेतु पंप शाफ्ट बहुत छोटा होता है तथा मोटर एवं पंप का अलाइनमेंट ठीक होता है।
- प्रोपेलर पंप लगभग 9-12 मीटर तक की गहराई से पानी उठा सकता है। कम हेड यानि कम शीर्ष पर अधिक निस्सारण प्राप्त करने के लिए, नदी, तालाब आदि स्त्रोतों से पानी उठाने के लिये प्रयोग किया जाता है।
- जेट पंप लगभग 18 मीटर से भी अधिक गहराई से पानी उठा सकता है। यह गहरे कुयें से कम से कम मात्रा में पानी निकालने के लिये उपयुक्त होता है। यह अधिक सक्शन हेड से पानी उठाने के काम आता है। जहां पर साधारण पंप कार्य नहीं कर सकता, वहां इसका प्रयोग किया जाता है।
- रेसीप्रोकेटिंग पंप अधिक ऊंचाई लगभग 45 मीटर तक किन्तु कम मात्रा में पानी उठाता है यानि कि डिस्चार्ज कम देता है अत: खेतों की सिंचाई के लिये उपयुक्त नहीं है।

पंप का चुनाव करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

- फार्म या खेत में ली जाने वाली फसल, वहां की जलवायु, फसल के लिये जलमांग आदि को ध्यान में रखकर ही पंप का चुनाव करना चाहिये।
- खेत में कई तरह की फसलें अलग-अलग ऋतुओं में बोई जाती हैं जिनकी जलमांग भी अलग-अलग होती है। परंतु किसी विशेष फसल जिसकी जलमांग अधिकतम हो, उसी के अनुरूप पंप का चुनाव करना चाहिए।
- इसके अतिरिक्त जलस्त्रोत/सिंचाई के साधन में पानी किस हिसाब से प्राप्त होता है जो समस्त फसलों की जलमांग के अनुरूप है या नहीं, इस बात का ध्यान पंप चुनाव के समय अवश्य रखना चाहिए।
- किसानों को भविष्य में संभावित फसल प्रणाली में बदलाव को ध्यान में रखकर पंप के आकार का चुनाव करना आवश्यक है।
- इसके अलावा किसान भाइयों को पंप का चुनाव करते समय फार्म का क्षेत्रफल, पंप चलाने की शक्ति जैसे डीजल इंजन या विद्युत मोटर, जलस्तर, भूमि की किस्म, पंप की कार्यक्षमता, पंप का मूल्य, आई.एस.आई. आदि बातों का भी ध्यान रखना चाहिए।

पंप की स्थापना करते वक्त ध्यान रखने योग्य बातें

पंप को लगातार चलाने के लिए यह आवश्यक है कि वह उचित स्थान पर ठीक प्रकार से स्थापित किया गया हो।

- जहां तक संभव हो पंप को सूखे स्थान पर एवं मजबूत फाउंडेशन पर स्थापित करना चाहिए। मजबूत फाउंडेशन होने से पंप चलाते समय कंपन कम होता है तथा अपनी पूरी क्षमता से कार्य करता है।
- पंप की स्थिति पानी के पास होनी चाहिये तथा सक्शन पाइप जहां तक संभव हो कम से कम होना चाहिये।
- पंप को जहां तक संभव हो जलस्तर के पास रखें। पंप से अधिकतम पानी उठाने के लिए पंप एवं जलस्तर के बीच अधिकतम दूरी 10 फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए। पंप यदि जलस्तर के पास होगा तो इंजन पर भार कम पड़ेगा तथा डीजल की भी बचत होगी।
- पंप तथा इंजन या पंप तथा मोटर एक ही सीध में रखने चाहिये। यदि अलाइनमेंट ठीक रहेगा तो पट्टा बार-बार नहीं उतरेगा तथा सिंचाई में रुकावट भी नहीं आयेगी।
- इंजन तथा पंप के बीच में दूरी 10-15 फीट के बीच में होनी चाहिए जिससे की पानी उचित मात्रा में मिलता रहे।
- घर्षण को कम करने के लिए तथा डीजल की कम खपत के लिये सक्शन एवं डिलीवरी पाइप का व्यास उचित एवं एक समान होना चाहिए जैसे 3 गुणा 3 इंच।
- पंप में बाहर से हवा नहीं जानी चाहिए। पंप में यदि हवा प्रवेश कर गई हो तो टी वाल्व को खोलकर हवा बाहर निकाल दें तथा हवा निकल जाने पर उसे पुन: कस दें।
- इंजन को चलते समय ठण्डा करना अति आवश्यक होता है। इंजन को ठण्डा करने के लिये डिलीवरी पाइप में एक छोटी सी नली लगी होती है। इस नली में रबड़ का पतला पाइप लगाकर ठण्डे पानी को इंजन में बने हुए स्थानों से गुजारते हैं जिससे इंजन ठण्डा रहता है।

फसल बीमा फसलों को जोखिम से बचाने में कारगर

नर्मदापुरम। उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास नर्मदापुरम ने बताया कि जिले के किसान प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनांतर्गत रबी मौसम में अधिसूचित फसलों का बीमा 31 दिसंबर 2024 तक करवा सकते हैं। शासन के निर्देश अनुसार बीमा कराने की अंतिम तिथि निर्धारित की गई है। किसान भाई निर्धारित तिथि तक संबंधित बैंको/सहकारी समिति में अपनी फसल का बीमा करा सकते हैं।

फसल बीमा योजना शासन द्वारा स्वैच्छिक की गई है। रबी मौसम के लिए प्रीमियम राशि स्कूल ऑफ फायनेंस का 1.5 प्रतिशत देय है। अऋणी कृषक अपनी अधिसूचित फसलों का बीमा संबंधित बैंक शाखा एवं लोक सेवा केंद्र के माध्यम से करवा सकते हैं। ऋणी कृषकों का बीमा संबंधित बैंक के माध्यम से किया जावेगा।

रबी मौसम में पटवारी हल्का स्तर पर गेहूं सिंचित, गेहूँ असिंचित, चना एवं राई, सरसों फसलों को अधिसूचित किया गया है। रबी गेहूं सिंचित फसल हेतु प्रति हेक्टेयर 675 रुपये, चना फसल हेतु प्रति हेक्टेयर 594 रुपये एवं राई सरसों फसल हेतु प्रति हेक्टेयर 510 रुपये प्रीमियम किसानों को देय होगा। ऋणी कृषक वास्तविक रूप से बोई गई फसल का ही बैंक में जाकर बीमा करावें, ताकि बीमा दावा राशि प्राप्त करने में असुविधा न हो।

फायदेमंद सहजन की खेती

★ डॉ.वाय.के.शुक्ला ★ डॉ. रश्मि शुक्ला
★ डॉ. डी.के. वाणी
कृषि विज्ञान केन्द्र, खंडवा (म.प्र.)

सहजन पौष्टिकता से भरपूर बहुउद्देशीय वृक्ष है। सहजन के वृक्ष का प्रत्येक भाग जड़, तना, पत्ती, फल, फूल, बीज तथा तेल किसी न किसी रूप से मनुष्य एवं जानवरों द्वारा उपयोग में लाया जाता है।

आयुर्वेद में मोरिंगा का उपयोग प्राचीन समय से चला आ रहा है। पौष्टिकता से भरपूर होने के कारण इससे विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाये जाने लगे हैं। यदि इस पौधे का प्रत्येक घर या प्रत्येक परिवार में विधिवत उपयोग किया जाए तो यह कुपोषण की समस्या का समाधान करने में अहम भूमिका निभा सकता है। इन दिनों सहजन की फूलों वाली टहनियां बाजारों में आसानी से देखने को मिल जाती है। साथ ही सहजन की फलियां यानी कि ड्रमस्टिक भी मिल जाती है। इनकी फलियों में अन्य सब्जियों व फलों की तुलना में विटामिन, प्रोटीन, कैल्शियम, पोटेशियम, आयरन, अमीनो एसिड व खनिज पदार्थ अधिक होते हैं। इसकी पत्तियां व फूल भी विभिन्न पोषक तत्वों का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। जिनमें विटामिन बी से बीटा कैरोटीन, मैग्नीशियम, प्रोटीन प्रचुरता से पाए जाते हैं। इनके बीजों से प्राप्त तेल में जैतून के तेल से भी ज्यादा प्रभावशाली गुण होते हैं। इस प्रकार इस पौधे का फल, फूल, पत्ते, तना और यहां तक की जड़ भी उपयोगी है। इस पौधे के बहुत सारे औषधीय उपयोग है जैसे- घाव भरने में मदद करना, दर्द व सूजन को कम करने में मदद करना, अंधता निवारण में उपयोगी, हड्डियों की बीमारियों में काम आता है, महिला सुपोषण हेतु उपयोगी, गैस्ट्रिक और अल्सर में उपयोगी, ब्लड शुगर और ब्लड प्रेशर की बीमारियों में उपयोगी, तंत्रिका तंत्र को प्रभावी बनाने, मस्तिष्क की कार्यक्षमता बढ़ाने और त्वचा में निखार लाने और इन जैसी कई बीमारियों और रोगों में काम आता है। इसके अलावा इसकी छाल का उपयोग पशुओं के सींग टूटने पर बांधने पर आराम मिलता है।

सहजन की किस्में : कृषि विश्वविद्यालयों, अनुसंधान केंद्रों, आईसीएआर अनुसंधान केंद्रों आदि द्वारा उत्पादन क्षमता, पकने की अवधि, आदि की बातें ध्यान में रखने के लिए उन्नत किस्मों का विकास किया जो लाभदायक है। उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों में पी के एम. 1, पी के एम. 2, ओडीसी, सी ओ. 1 आदि।

जलवायु एवं मृदा : सहजन की खेती शुष्क व गर्म जलवायु में भी आसानी से होती है। पौधों की बढ़वार के लिए 25 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त माना जाता है। लेकिन यह पौधा 10 डिग्री सेल्सियस तापमान से लेकर 50 डिग्री सेल्सियस तापमान तक भी आसानी से फूल-फूल सकता है। अधिक धूप और गर्म वातावरण इसके लिए उपयुक्त माना जाता है। सहजन उत्पादन के लिए विशेष प्रकार की मृदा की आवश्यकता नहीं होती। यह विभिन्न प्रकार की जमीन में पनपता है। सहजन बलुई,चिकनी मिट्टी, अम्लीय मिट्टी, काली मिट्टी में अच्छी तरह से बढ़ता है। इस पौधे में 21 मिली प्रति सेंटीमीटर तक लवणता तथा पी.एच. मान 5 से 8 सहन करने क्षमता होती है। सहजन को लगाने का समय ज्यादा बारिश का और ज्यादा ठंड का मौसम छोड़ कर सहजन को सालभर में कभी भी लगा सकते हैं।

खाद एवं उर्वरक : सहजन की जैविक खेती के लिए नीचे दिए गए खादों एवं उर्वरकों कीआवश्यकता होती है।

वर्मी कंपोस्ट खाद- जिसे जिसे डालने से हमारे पोषक तत्वों की पूर्ति होती है।

ट्राईकोडर्मा पाउडर- एक फफूंदनाशक है जो जमीन के हानिकारक फफूंद को नष्ट करता है।

नीम की खली- यह एक कीटनाशक है जिसे जमीन में डालने से जमीन में मौजूद कीट या उनके अंडे नष्ट होते हैं।

जिप्सम- यह एक मृदा अनुकूलक या सॉइल कंडीशनर है जो मिट्टी को भुरभुरा एवं हवादार बना देता है। सहजन के पौधे बीज द्वारा उगाए जाते हैं। बीज द्वारा उगाए गए पौधे ज्यादा गुण वाले होते हैं। इन सभी खाद एवं उर्वरकों को अलग-अलग मात्रा में डालना जरूरी है जिससे हमारे पौधे को उपयोगी पोषक तत्व और सहयोग मिलता है।

सहजन के बीज लगाने का तरीका : सहजन की पत्तों की खेती के लिए 1 एकड़ में 6.5 किलो बीज की आवश्यकता होती है। पत्तों की खेती में बीज को कम दूरी पर लगाया जाता है। पौधों से पौधों की दूरी डेढ़ फिट होती है और लाइन से दूसरी लाइन की दूरी डेढ़ फिट होती है। इस प्रकार 1 एकड़ में लगभग 20000 पौधे लगाए जा सकते हैं। बीज को लगाने से पहले उनको उपचारित किया जाना जरूरी है।

बीज का उपचार: सहजन का बीज ऊपर से कठोर होता है इसलिए इसे लगाने से पहले बीज को उपचारित किया जाता है। इसको उपचारित करने से 2 फायदे होते हैं। पहला- इसका जमाव प्रतिशत बढ़ जाता है और दूसरा फायदा बीज को हानिकारक जंतुओं से मुक्त किया जाता है। बीजों को जैविक तरीके से उपचारित करने के लिए एक 10 लीटर आकार वाला बर्तन लें। उसमें 5 लीटर पानी डालें। उसी पानी में 2 लीटर देसी गाय का गोमूत्र और 100 ग्राम ट्राइकोडरमा पाउडर मिलाएं। इन सभी सामग्री को अच्छी तरह से मिलाएं। उसके बाद उसमें बीज को डालें और उस पानी में बीजों को लगभग 5 से 6 घंटे रहने दें। बीजों को 6 घंटे बाद उस मिश्रण में से निकाले और उसे कॉटन के कपड़े में डालें। कपड़े की गांठ बांधे और उस पोटली को रात भर या 12 घंटे तक एक जगह पर लटकाए। बीच-बीच में इस पोटली पर पानी का छिड़काव करें। सुबह पोटली को खोल दें। उसमें से बीज को निकाले, यह बीज बोने के लिए तैयार होंगे।

सहजन का बीज लगाने का तरीका

सीधी बुवाई: सहजन की पत्तों की खेती के लिए सहजन के बीज 1.5 फीट गुणा 1.5 फीटअंतर से लगाए जाएंगे। पौधे से दूसरे पौधे की दूरी डेढ़ फीट और एक लाइन से दूसरे लाइन की दूरी डेढ़ फीट होगी। इस तरह से बीज को हाथ से या खुरपी की मदद से छोटा सा गड्ढा बनाकर उसमें डाला जाएगा और ऊपर से मिट्टी ढक दी जाएगी। पूरे खेत में बीज लगाने के बाद तुरंत सिंचाई की व्यवस्था होनी चाहिए। एक से डेढ़ हफ्ते के लिए जमीन में बीजों के पास नमी बरकरार रहनी चाहिए ताकि उसका अंकुरण अच्छी तरह से हो। एक बार पौधा बीज में से ऊपर आ जाए उसके बाद यानी कि 15 दिनों के बाद दूसरी सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसके बाद वाली सिंचाई अपनी जमीन के अनुसार और अपने एरिया के जलवायु के अनुसार करनी पड़ती है। मोरिंगा की खेती के लिए आमतौर पर ज्यादा पानी की आवश्यकता नहीं होती।

नर्सरी बनाना : किसान भाई 3 मीटर गुणा 3 मीटर की रैज्ड बेड बनाएएं। नर्सरी में बीजों से पौधा तयार होगा जिसे 6-7 हफ्ते तक रखें। नर्सरी में पौधा लगभग 1 से 1.5 फुट ऊंचाई का होगा। उसके बाद नर्सरी में से इन पौधों को निकालें और मुख्य भूमि में लगाएं। उसके तुरंत बाद सिंचाई करनी होती है।

सहजन में आने वाले रोग एवं कीट: मोरिंगा में रोग व कीटों से बहुत ज्यादा नुकसान नहीं होता। पौधों की शाखाओं, पत्तियों को विशाल को कीड़े अधिक नुकसान पहुंचाते। सहजन के पौधों को हानि पहुंचाने वाले कीड़े जैसे कि मोरिंगा हेयर, हेयर सुंडी या बालों वाली सूंडी, मोरिंगा बुडवर्म, पत्ती भक्षक सुंडी, फली भेदक मक्खी आदि के अंडे अधिक नुकसान पहुंचाते हैं। इस कीटों की रोकथाम के लिए आप हमारी संस्था से संपर्क कर सकते हैं।

सहजन के पत्तों की कटाई: सहजन की पत्तों की खेती में तीन 3 महीने के अंतराल से पत्तों की कटाई-छंटाई होती है। इस प्रकार से सहजन की 1 साल में चार बार कटाई होती है। लेकिन पहली कटाई चार या पांचवें माह में आ सकती है। सहजन की डालियों को काटने के बाद उसमें से छोटी डालियां अलग करनी है और उन छोटी डालियों को पानी से धोना है। पानी से धोने के बाद इन पत्तियों को छांव में या शेडनेट के नीचे सुखाने के लिए डालना है। आमतौर पर सहजन की पत्तियां अच्छे प्रकाश में दिनों में 3 से 4 दिन में सूख जाती है। पत्तों को सुखाने के बाद इनको बोरियों में भरा जाता है और बाद में इन्हें स्टोर किया या बेचा जाता है।

सहजन की खेती में अंतर फसल : मोरिंगा की फसल के साथ किसान भाई अंतर फसलें ले सकते हैं। जिसमें सब्जियां या अन्य औषधीय पौधे जो की ऊंचाई में कम हैं जैसे- स्टीविया, सफेद मूसली, अस्वगंधा, तुलसी, काली हल्दी और अन्य बहुत सारी फसलें अंतर फसलों के तौर पर ले सकते हैं।

● डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश शासन

विरासत के साथ विकसित मध्यप्रदेश निर्माण के संकल्प का एक वर्ष

देश का हृदय प्रांत मध्यप्रदेश गौरवशाली इतिहास और विश्वविख्यात सांस्कृतिक परंपराओं के लिये प्रसिद्ध है। सृष्टि के आरंभ से लेकर अब तक मानव सभ्यता के कई चिन्ह मध्यप्रदेश की धरती पर हैं। यहां पर्याप्त भू-संपदा, वन-संपदा, जल-संपदा, और खनिज-संपदा है। हम विगत एक वर्ष में विकसित मध्यप्रदेश निर्माण के साथ प्रदेश की विरासत को सहेजने के संकल्प को लेकर आगे बढ़े हैं।

यह हमारा सौभाग्य है कि डबल इंजन की सरकार का लाभ मध्यप्रदेश और प्रदेशवासियों को मिल रहा है। इस विशेष संयोग में प्रदेश ने नवाचारों के साथ विकास के कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं। इन दिनों प्रदेश में जनकल्याण पर्व मनाया जा रहा है। यह प्रदेश की समृद्धि का उत्सव है। इसमें भविष्य की कई संभावनाएं आकार लेंगी। शासन-प्रशासन और प्रदेशवासी सभी मिलकर विकास की गंगा बहाएंगे। आपकी सरकार, आपके द्वार होगी और जनता के हित जनता तक पहुंचेंगे। इसमें नई सौगातें भी शामिल होंगी।

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के नदी जोड़ो के स्वप्न को मध्यप्रदेश में धरातल पर उतारा जा रहा है। 17 दिसंबर को पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना तथा 25 दिसंबर को केन-बेतवा लिंक परियोजना का शिलान्यास प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा किया जायेगा। यह आनंद का विषय है कि मध्यप्रदेश देश में पहला ऐसा राज्य है जहां 2 नदी जोड़ो परियोजनाओं पर काम किया जा रहा है। इससे जलस्रोत परस्पर जुड़ेंगे तो धरती का जल स्तर सुधरेगा, हमारे गांव और क्षेत्रों को पानी सुलभ होगा तथा अन्नदाता को सिंचाई के लिये पर्याप्त पानी मिलेगा। प्रदेश में जिस तरह कृषि, उद्योग, पर्यटन और आध्यात्मिक पर्यटन के लिये संभावनाएं विकसित हो रही हैं। इसमें औद्योगिक क्रांति, हरित क्रांति और पर्यटन क्रांति की त्रिवेणी से गरीबी पूर्णतः समाप्त हो जायेगी। पिछले दिनों रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित करके मध्यप्रदेश के गांव-गांव को औद्योगीकरण और आधुनिक उत्पाद से जोड़ने का प्रयत्न किया गया है। भविष्य में जिला स्तर पर भी इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित होंगी। हैदराबाद, कोयंबटूर तथा मुंबई में रोड-शो और यूके-जर्मनी के उद्योगपतियों को निवेश के लिये प्रदेश में आमंत्रित करना उद्योग विस्तार का उपक्रम है। क्षेत्रीयता से लेकर ग्लोबल स्तर तक उद्योग के लिये किया गया यह पहला नवाचार है। प्रधानमंत्री जी ने विकसित भारत निर्माण के लिये ज्ञान गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी के सम्मान की बात कही है। हमने इन्हीं 4 आधार स्तंभों पर केंद्रित समग्र विकास का रोडमैप तैयार किया है। प्रदेश सरकार गरीब कल्याण, युवा शक्ति, किसान-कल्याण और नारी शक्ति मिशन लागू करने जा रही है। हमारा लक्ष्य है अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का कल्याण हो, उन्हें बेहतर भविष्य निर्माण का अवसर मिले। प्रदेश में हर गरीब की पढ़ाई, लिखाई, दवाई, नौकरी और रहने-खाने से लेकर जीवन की हर जरूरत को सरकार पूरा कर रही है। अब गरीब-कल्याण मिशन में होने वाली गतिविधियों और कार्यों से हर गरीब के जीवन-स्तर में सुधार आयेगा, उनकी समृद्धि से प्रदेश के विकास को गति मिलेगी। यह गरीबों के प्रति हमारी संवेदनशीलता ही है कि हुकुमचंद मिल के 30 साल पुराने विवाद से लेकर श्रमिकों की मिल से जुड़ी हर समस्या का हल निकाला और उन्हें उनका अधिकार दिलाया है, वहीं गंभीर बीमारी के गरीब मरीजों के लिये एयर एंबुलेंस सेवा भी शुरू की है। राष्ट्र को समृद्ध बनाने की शक्ति युवाओं में है। आवश्यक है कि युवा कर्मशील हो, विचारशील हो और अपनी परंपराओं से जुड़ा हुआ हो। इसी अनुरूप युवाओं को शिक्षण और प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में तैयार राष्ट्रीय शिक्षा नीति सबसे पहले मध्यप्रदेश में लागू हुई। यहां स्किल्ड युवा तैयार हो रहे हैं। प्रदेश के सभी जिलों में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस से उत्कृष्ट शिक्षा मिलेगी, भारतीय ज्ञान परंपरा और युगानुकूल शिक्षा के समावेश से युवाओं को अपनी समृद्ध विरासत का ज्ञान होगा और बेहतर भविष्य निर्माण के द्वार खुलेंगे। हर विकासखंड में स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स के निर्माण से गांव-गांव से खेल प्रतिभाएं उभरकर आएंगी। युवा शक्ति मिशन में प्रदेश के युवाओं की शिक्षा, आधुनिक तकनीकी में योग्यता और कौशल निर्माण के साथ सर्वांगीण विकास की लक्ष्य प्राप्ति शामिल है।

प्रदेश में स्किल्ड युवा अपना स्व-रोज़गार स्थापित कर रहे हैं। वहीं शासकीय सेवाओं में लगभग ढाई लाख युवाओं की भर्ती का अभियान भी शुरू हो गया है। मध्यप्रदेश कृषि प्रधान प्रांत है। किसान कल्याण मिशन में कृषि की उपज बढ़ाने की दिशा में ठोस प्रयास किये जायेंगे। अगले 5 वर्ष में सिंचाई का रकबा 50 लाख हेक्टेयर से 1 करोड़ हेक्टेयर किया जायेगा। अन्नदाता को शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण देने के साथ खाद, बीज से लेकर उपज की बिक्री तक की व्यवस्था की गई है। किसानों के खेत में सोलर पंप लगाए जाएंगे, जिससे वे अपने उपयोग के लिए अपनी बिजली स्वयं बनायेंगे। हम प्रयासरत हैं कि जल की एक-एक बूंद का लाभ किसानों को मिले। हम चाहते हैं कि किसान चिंता मुक्त होकर खेती करें और खुशहाल जीवन जियें। हर किसान को गौ-पालक और हर घर को गौ-रक्षक बनाने का प्रयास है। मध्यप्रदेश न केवल कृषि उत्पादन में देश में शीर्ष पर हो, बल्कि दुग्ध उत्पादन और दुग्ध निर्यातक प्रदेश बने इसीलिये मध्यप्रदेश में गौ-वंश पालन के लिये अनुदान दिया जा रहा है।

इफको नमो ड्रोन दीदी सुश्री निधा को

सीएम ने भेंट किया प्रशंसा पत्र

ग्वालियर। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में तथा ज्योतिरादित्य सिंधिया संचार मंत्री भारत सरकार, नरेन्द्र सिंह तोमर अध्यक्ष विधानसभा मध्य प्रदेश के विशिष्ट आतिथ्य में वृहद युवा संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया कार्यक्रम में इफ़को नमो ड्रोन दीदी सुश्री निधा अख्तर के द्वारा नैनो उर्वरकों का छिड़काव करने के लिए मुख्यमंत्री के द्वारा प्रशंसा पत्र भेंट किया गया। इस मौके पर जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट सहित गणमान्य नागरिक एवं वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

ड्रोन दीदी निधा अख्तर के द्वारा 325 किसानों की 2250 एकड़ भूमि में नैनो उर्वरकों का उपयोग कर किसानों की लागत कम की, साथ ही भूमि, जल तथा वायु को रासायनिक उर्वरकों के प्रदूषण से भी बचाया।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

महिला सशक्तिकरण-

शासकीय सेवाओं में महिलाओं को अब 35 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा।

- लाड़ली बहना योजना में 1.29 करोड़ बहनों को जनवरी 2024 से अब तक 19 हजार 212 करोड़ रुपये से अधिक की राशि का अंतरण किया गया। रक्षाबंधन पर बहनों को 250-250 रूपये अतिरिक्त राशि नेग के रूप में दी गई।
- प्रदेश की लगभग 26 लाख लाड़ली बहनों को 450 रुपये में गैस सिलेंडर की रीफिलिंग के लिए वर्ष 2024 में 715 करोड़ रुपये से अधिक की राशि का अंतरण किया गया।
- एक लाख से अधिक दीदीयां बनी लखपति बनी हैं।
- महिला उद्यमियों के प्रोत्साहन के लिए 850 एमएसएमई इकाइयों को 275 करोड़ रुपये का अंतरण।
- सेनिटेशन एवं हाईजीन योजना में 19 लाख से अधिक बालिकाओं को 57 करोड़ 18 लाख रुपये की राशि अंतरित।
- आहार अनुदान योजना में विशेष पिछड़ी जनजातीय बहनों के खाते में जनवरी, 2024 से लेकर अब तक 325 करोड़ रुपये की राशि अंतरित।

अर्थव्यवस्था दोगुनी

प्रदेश की अर्थव्यवस्था को दोगुना किया जायेगा।

- कृषकों को सौर ऊर्जा
- एक लाख 25 हजार अस्थाई विद्युत कनेक्शन लेने वाले कृषकों को सौर ऊर्जा के पम्प प्रदाय किये जाएंगे। अगले चार वर्ष में सौर ऊर्जा पम्प प्रदाय कर किसानों को विद्युत आपूर्ति में आत्मनिर्भर बनाया जायेगा।
- कृषि फसलों के विविधिकरण की पहल
- कृषि फसलों के विविधिकरण की पहल की जाएगी, जिससे किसानों की आय में बढ़ौत्तरी हो। अधिक दाम प्रदान करने वाली फसलों की ओर किसानों को प्रोत्साहित किया जायेगा।
- सिंचित क्षेत्र दोगुना करने का लक्ष्य
- प्रदेश में वर्तमान में 50 लाख हेक्टेयर सिंचित क्षेत्र है। अगले पाँच वर्षों में इसे दोगुना (1 करोड़ हेक्टेयर) किया जायेगा।

पीपीपी मोड पर मेडिकल कॉलेज

वर्तमान में 17 शासकीय मेडिकल कॉलेज है तथा 13 प्रायवेट मेडिकल कॉलेज है। पीपीपी मोड पर 12 और 8 शासकीय मेडिकल कॉलेज चालू किये जायेंगे।

- समितियों का विस्तार
- प्रदेश में दुग्ध समितियों का विस्तार किया जायेगा। वर्तमान में प्राथमिक दुग्ध समितियां 8,500 गाँवों में ही है। एक वर्ष में 15 हजार गांवों तथा 4 वर्षों में प्रदेश के समस्त गाँवों तक दुग्ध समितियां गठित की जायेंगी।

ACE ने लांच किया DI 6565 AV ट्रैक्टर

पुणे। विगत दिनों आयोजित किसान प्रदर्शनी एवं कृषि मेला के दौरान देश की तेजी से उभरती ट्रैक्टर कंपनी एक्शन कंस्ट्रक्शन्स इक्विपमेंट लिमिटेड ने DI6565AV ट्रैक्टर लांच किया। 60.5 एचपी श्रेणी का यह ट्रैक्टर टर्म-IV इंजिन के साथ लांच किया गया है। ACE का यह ट्रैक्टर 4 सिलिण्डर युक्त 4088 सीसी के दमदार इंजन के साथ उतारा गया है।

लांचिंग के मौके पर कंपनी के चीफ जनरल मैनेजर सेल्स श्री रविन्द्र सिंह खनेजा, मार्केटिंग मैनेजर राजीव रंजन सहित कंपनी के मार्केटिंग टीम के सहयोगी उपस्थित थे।

DI6565AV ट्रैक्टर की प्रमुख विशेषता यह है कि यह ट्रैक्टर कंस्ट्रक्शंस (निर्माण) क्षेत्र के लिये विशेष उपयोगी है। इसकी कार्यक्षमता अत्यधिक दमदार है। यह ट्रैक्टर कठिन से कठिन कार्यों को भी सहजता से करने की ताकत रखता है। इसमें प्रयुक्त किया गया। 2 हजार किलोग्राम का लिफ्ट, तेल में डूबे (O.I.B.) ब्रेक्स एवं डुअल क्लच इसकी कार्यक्षमता को बढ़ाते हैं। पावर स्टीयरिंग से परिपूर्ण यह ट्रैक्टर संचालन में अत्यधिक आरामदेह है। खेती के कार्यों को भी DI6565AVबखूबी करने में सक्षम है। इसके द्वारा सुपर सीडर, हैप्पी सीडर, लेजर लेबलर, हार्वेस्टर कंबाइन, हैवी ढुलाई, एमबी प्लाऊ एवं स्ट्रा रीपर इत्यादि आसानी से चलाये जा सकते हैं। कंपनी को विश्वास है कि निर्माण एवं कृषि क्षेत्र के लिये यह ट्रैक्टर मील का पत्थर साबित होगा।

धानुका फफूंदीनाशक जैनेट, रोगों पर करे नियंत्रण दे स्वस्थ्य और अधिक उपज

सागर। फसलों में जब बीमारियों के रोकथाम की बात आती है तो मैं धानुका के जैनेट उत्पाद पर ही भरोसा करता हूँ। यह कहना है जिला सागर, तहसील राहतगढ़ के ग्राम लोटना निवासी किसान जितेन्द्र ठाकुर का। जितेन्द्र बताते हैं कि मेरा मुख्य व्यवसाय खेती है। मेरे पास लगभग 50 एकड़ जमीन है जिसमें मैं रबी सीजन में चना एवं मसूर की खेती करता हूँ। चना और मसूर की फसलों में उकठा जिसे विल्ट भी कहा जाता है का प्रकोप होता है। फसलों में पेड़ के सूखने से काफी नुकसान हो जाता है। मेरी फसलों में भी उकठाए विल्ट, पेड़ सूखना जैसे रोग लगने से काफी नुकसान हुआ। मैंने इन रोगों की रोकथाम के लिये कई कंपनियों की फफूंदनाशक दवाओं का प्रयोग किया परंतु अच्छे परिणाम नहीं मिले। फिर एक दिन मेरी मुलाकात धानुका कंपनी के एक अधिकारी से हुई जिन्होंने मुझे धानुका जैनेट के उपयोग की सलाह दी। उन्होंने बताया कि धानुका जैनेट एक फफूंदनाशक और जीवाणुनाशक दवा है। यह फसलों में रोग फैलाने वाली फफूंद और जीवाणुओं का प्रभावी ढंग से रोकथाम कर फसल को सुरक्षित रखता है। मैंने चना व मसूर की फ्सल में जैनेट का छिड़काव किया। रोग से ग्रसित फसल पर जैनेट का बहुत अच्छा परिणाम देखने को मिला। इसके उपयोग से लगभग 90 प्रतिशत फसल के पौधे स्वस्थ्य दिखे। स्वस्थ पौधों से फसल की अच्छी वृद्धि और विकास हुआ। अधिक उपज भी मिली। मैं अपने अनुभव के आधार पर सभी किसान भाइयों से कहना चाहता हूँ कि चना एवं मसूर की फसल में उकठा, विल्ट या पेड़ सूखने जैसी अगर कोई समस्या आती है तो धानुका कंपनी की फफूंदीनाशक दवा जैनेट का इस्तेमाल जरूर करें। इस बारे में अधिक जानकारी के लिए मेरे मोबाइल 9340850097 पर संपर्क कर सकते हैं। जय जवान, जय किसान।

इफको कृषि तकनीकी जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन

देवास। मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक, इफको टोकियो एवं इफको के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम चापड़ा जिला देवास में कृषि तकनीकी जागरूकता और वित्तीय समावेशन संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 500 कृषकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम रमेश चंद्र बेहेरा अध्यक्ष मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. डी. के. सोलंकी राज्य विपणन प्रबंधक इफको भोपाल, डॉ. ओम शरण तिवारी वरिष्ठ विपणन प्रबंधक इफको भोपाल एवं सौरभ सिन्हा राज्य प्रमुख (मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़) इफको टोकियो जनरल इंश्योरेंस कंपनी के विशेष आतिथ्य में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में श्री बेहरा ने मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से कृषकों के वित्तीय सहयोग के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ डी.के. सोलंकी ने जैव उर्वरक एवं नैनो उर्वरक के महत्व को बताया। उन्होंने बताया कि रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग से मृदा एवं मानव स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। रासायनिक उर्वरकों के कुप्रभाव को कम करने के लिए कृषकों को जैव उर्वरक एवं नैनो उर्वरक का उपयोग करना चाहिए। इससे खेती की लागत कम होगी एवं मृदा व मानव स्वास्थ्य बना रहेगा।

डॉ. ओम शरण तिवारी ने बताया कि हरित क्रांति के बाद रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग से श्री मृदा उत्पादकता पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। मृदा उत्पादकता को बढ़ाने के लिए आधुनिक जल विलय उर्वरक एवं नैनो उर्वरक का उपयोग करना अति आवश्यक है। सौरभ सिंह ने इफको टोकियो जनरल इंश्योरेंस की विभिन्न पालिसियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। हरिनारायण चतुर्वेदी क्षेत्रीय प्रबंधक मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक देवास ने कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में बताया एवं शुभम जैन जनरल मैनेजर इफको टोकियों जनरल इंश्योरेंस कंपनी ने कार्यक्रम का संचालन किया। दिवाकर प्रसाद डिप्टी जनरल मैनेजर इफको टोकियों जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड ने कार्यक्रम में कृषक बंधुओं एवं अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

शनमुखा एग्रीटेक ने किया किसान संगोष्ठी का आयोजन

उज्जैन। तहसील घटिया ग्राम पाट, जिला उज्जैन में किसान संगोष्ठी का आयोजन शन्मुखा एग्रीटेक लिमिटेड द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम में शन्मुखा के अधिकारी सीनियर मार्केटिंग डेवलपमेंट मैनेजर श्री सुरेंद्र शर्मा, एवं एरिया सेल्स मैनेजर अजय भदकारिया ने भाग लिया। किसानों को गेहूँ और प्याज, लहसुन की फसल में उपयोग होने वाले उत्पाद वामगोल्ड डी,धामन, मोक्षा और तेजस्वी उत्पादों की जानकारी दी। सह अधिकृत विक्रेता माँ ब्रम्हाणी कृषि सेवा केंद्र के प्रोपराइटर रविंद्र सिंह के द्वारा किसानो का आभार व्यक्त किया गया

शनमुखा एग्रीटेक की किसान संगोष्ठी आयोजित

नागदा। ग्राम नागदा, जिला उज्जैन में किसान संगोष्ठी का आयोजन शन्मुखा एग्रीटेक लिमिटेड द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में शन्मुखा के अधिकारी सीनियर मार्केटिंग डेवलपमेंट मैनेजर श्री सुरेंद्र शर्मा, सीनियर रीजनल मैनेजर श्री सुरेश दत्त सक्सेना एवं एरिया सेल्स मैनेजर अजय भदकारिया और सेल्स अफसर प्रवीण मारु ने भाग लिया। किसानों को गेहूँ, प्याज, मटर और लहसुन की फसल में उपयोग होने वाले उत्पाद वामगोल्ड डी,जीत प्लस, एकलव्य प्लस, धामन, मोक्षा, एवेंजर उत्पादो की जानकारी दी। अंत में अधिकृत विक्रेता माली कृषि सेवा केंद्र के प्रोपराइटर दिनेश डोडिया और सुरेश प्रजापति के द्वारा किसानों का आभार व्यक्त किया गया

★ माधव पटेल, दमोह (म.प्र.)

हमारी संस्कृति दुनिया की सबसे व्यवस्थित संस्कृतियों में से एक है। हमारी संस्कृति में मनुष्य के बराबर ही पशुओं को भी महत्व दिया जाता रहा है। हमारी संस्कृति में पशुओं की पूजा की जाती रही है। ईसा से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व से ही हमें पशु पालन के साक्ष्य मिलते हैं।

पशुपालन भविष्य में रोजगार का क्षेत्र

सम्राट अशोक के समय में पशुपालन व पशु चिकित्सा के काम भी शुरू किए गए। पशुओं की देखभाल को भी हमारी संस्कृति में बहुत ही महत्व दिया जाता था और अभी भी दिया जाता है। हम पहले से पशुओं को इंसानों के बराबर ही तवज्जो देते हैं। भारतीय संस्कृति में हमारा परिवार, बगैर पशुओं के पूरा नहीं माना जाता है। पशुपालन हमारी संस्कृति और समाज का अभिन्न अंग रहा है। जहां भी व्यक्ति अपने निवास की व्यवस्था करता था उसी के निकट पशुओं के आवास को बनाया जाता था। पशुपालन प्रारंभ कल से ही हमारी अर्थव्यवस्था की मजबूती का एक प्रमुख घटक रहा है। रोजमर्रा के खर्चे हमेशा से ही पशुपालन के माध्यम से निकलते आए हैं। परंतु अधिक आधुनिकता की दौड़ में हमारे किसानों को कुछ हद तक पशुपालन से दूर किया जिसके कारण उनके ऊपर अनावश्यक खर्चों का बोझ बढ़ता गया और वह कर्ज में दबते चले गए। आज जब हमारे देश में बेरोजगारी एक बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है, इसने ग्रामीण भारत को भी अपनी चपेट में ले लिया है।

इस समस्या से निजात पाने में पशुपालन एक महत्वपूर्ण उपाय बनकर उभरा है। इसमें न केवल ग्रामीण क्षेत्र के लोग अपितु आज शहरों के पढ़े-लिखे बेरोजगार युवक भी अपनाकर मोटी कमाई कर रहे हैं। इसके पूर्व पशुपालन को ग्रामीण क्षेत्र का व्यवसाय ही माना जाता था। पर आज इस व्यवसाय को शहर के रहने वाले लोग भी अपना रहे हैं। गांवों के साथ-साथ अब पशुपालन का व्यवसाय शहरों में भी बड़े पैमाने पर अपना विस्तार कर रहा है। पशुपालन का दायरा अब केवल गाय-भैंस पालने तक सीमित नहीं रहा बल्कि मुर्गी पालन, मछली पालन, पर्ल कल्चर, बकरी पालन, भेड़ पालन, सूअर पालन तक विस्तारित हो गया है। आज जब जागरूकता का योग चल रहा है तो लोग मिलावटी चीजों से परहेज कर रहे हैं। इसके चलते पशुपालन का भविष्य सुनहरा है। लोगों की स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के कारण शुद्ध दुग्ध उत्पादों की मांग शहरी क्षेत्र के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्राथमिकता के साथ बढ़ रही है साथ ही साथ एक उत्पादों के मूल्य भी बहुत अच्छे प्राप्त हो रहे हैं, जिससे पशुपालकों की आय में उपलब्धिजनक वृद्धि हो रही है। वर्तमान में पशुपालन क्षेत्र के विस्तार को देखते हुए इसके प्रशिक्षण इसकी व्यवस्था की जानकारी व्यवस्थित तरीके से सरकार कई माध्यमों से दे रही है। विभिन्न पाठ्यक्रमों के माध्यम से पशुपालन को बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है। पशुपालन में आ रही समस्याओं को दूर करते हुए इसको लोकप्रिय और लाभदायक बनाने के लिए पशु चिकित्सकों और विज्ञान वैज्ञानिकों ने कई तरीके और तकनीकें खोजी हैं। अच्छी उत्पादन वाली नई नस्लों का विकास किया है।

उपचार की अनेक विधियां विकसित की जिससे पशुओं की मृत्यु दर बहुत कम हो गई और पशुपालकों को आर्थिक क्षति की संभावना है लगभग न के बराबर हो गई। वर्तमान पशुओं की नस्ल के हिसाब से पशु चिकित्सक उनका पूरा डाइट चार्ट, उनके आवास की व्यवस्था की जानकारी पशुपालकों को निरंतर दे रहे हैं जिससे पशु अच्छी मात्रा में उत्पादन भी दे रहे हैं। बाजार में पशुओं का पौष्टिक रेडीमेड आहार भी उपलब्ध होने से पशुपालकों को सहयोग मिल रहा है। युवाओं को स्वावलंबी और उद्यमी बनने के लिए जरूरी है कि विद्यालय पाठ्यक्रम में पशुपालन जैसे विषयों का अध्ययन निचली कक्षाओं से ही करवाया जाए जिससे कृषकों-पशुपालकों के प्रति विद्यार्थियों में सम्मान की भावना जागृत होने के साथ-साथ भविष्य में उसे रोजगार के रूप में चुनने का विकल्प रहेगा।

केवीके के प्रति अन्याय के खिलाफ एक दिवसीय विरोध प्रदर्शन

पन्ना। कृषि विज्ञान केंद्र पन्ना के सभी वैज्ञानिक एवं कर्मचारी एक दिनी सामूहिक हड़ताल पर रहे। यह विरोध प्रदर्शन केंद्र के समस्त वैज्ञानिकों/कर्मचारियों के हित में उनकी विभिन्न मांगों को लेकर किया गया। इस हड़ताल में कर्मचारियों ने आर.एस. परोदा समिति की सिफारिशों के अनुसार वेतन समानता, राष्ट्रीय पेंशन योजना के कार्यान्वयन, ग्रेच्युटी, अवकाश वेतन और अन्य लाभों के रूप में समान सेवानिवृत्ति लाभ लागू करने की मांग की। सभी वर्गों के कर्मचारियों ने एकजुट होकर अपनी मांगों को सरकार और प्रशासन के समक्ष रखने का आह्वान किया। कर्मचारियों का कहना है कि जब तक उनकी मांगों पर सकारात्मक कार्रवाई नहीं होती है, वे शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन जारी रखेंगे।

इस अवसर पर केंद्र के कर्मचारियों ने अपनी एकजुटता व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान स्थिति में सभी कर्मचारियों के साथ समानता और न्याय होना आवश्यक है। यह हड़ताल न केवल उनके अधिकारों के लिए है बल्कि उनके भविष्य को सुरक्षित करने के लिए भी महत्वपूर्ण है। इस हड़ताल में केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. पी.एन. त्रिपाठी, डॉ. आर.के. जायसवाल (वैज्ञानिक पौध संरक्षण), डॉ. आर.पी. सिंह (वैज्ञानिक उद्यानिकी), रितेश बागोरा (वरिष्ठ तकनीकी सहायक), जया कोरी (प्रक्षेत्र विस्तार अधिकारी) एवं देशराज प्रजापतिए (स्टेनोग्राफर सह कम्प्यूटर ऑपरेटर) शामिल रहे।

आपके फोन में ही है पुस्तकालय, ई लाइब्रेरी सेरा को समझने की जरुरत

ग्वालियर। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय में एक कार्यशाला का आयोजन हुआ। जिसमें पूर्व लाइब्रेरियन और प्रोफेसर, प्रोफेसर जयशंकर तेलंगाना एग्रीकल्चरल विश्वविद्यालय, हैदराबाद के डा. के. वीरंजनेयुलु ने आई.सी.ए.आर. द्वारा ई लाइब्रेरी सेरा को विस्तृत रूप से समझने के लिए एक वक्तव्य रखा गया इसमें कृषि और संबद्ध विज्ञान में पुस्तकालय सूचना प्रणाली, डेटाबेस और खुली पहुंच संसाधन बताया गया।

आज पुस्तकालय का परिदृश्य महज ज्ञान के भंडार से बदलकर हाइब्रिड लाइब्रेरी या डिजिटल लाइब्रेरी या ज्ञान प्रबंधन केंद्र में बदल गया है, जहां उपयोगकर्ता न केवल मुद्रित संसाधनों से बल्कि डिजिटल संसाधनों से भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कोई भी व्यक्ति अपने स्मार्ट फोन का उपयोग करके कहीं से भी ऑनलाइन सार्वजनिक पहुँच की जाँच कर सकता है।

वेतन भत्तों में कटौती को लेकर कलमबंद हड़ताल

मुरैना। कृषि विज्ञान केन्द्र, मुरैना के समस्त कर्मचारी एक दिवसीय कलम बंद हड़ताल पर रहे। यह सामूहिक कलमबंद हड़ताल पूरे देश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों में कार्यरत कर्मचारियों के वेतन भत्तों में शामिल एन.पी.एस., सेवानिवृत्ति सह मृत्यु उपादान (ग्रेजुएटी), अवकाश नगदीकरण, चिकित्सा भत्ता में आई.सी.ए.आर. द्वारा की गई कटौती को लेकर की जा रही है। उक्त कटौती को आगामी आदेश तक स्थगन किए जाने हेतु उच्च न्यायालय प्रमुख पीठ जबलपुर द्वारा दिए गए आदेश का पालन न किए जाने पर, माननीय एवं वरिष्ठ अधिकारियों के ध्यानाकर्षण लाने हेतु किया गया है।

कृषि विज्ञान केन्द्रों में पूर्व में दिये जा रहे समस्त लाभों को समान रूप से लागू रखने एवं सेवानिवृत्ति पश्चात के लाभों को पूर्व की भांति जारी रखने जैसी प्रमुख मांगों को लेकर सांकेतिक विरोध किया जा रहा है। किंतु केन्द्र की जीवंत इकाईयों का पूर्ण ध्यान रखा जा रहा है। समस्त स्टॉफ की ओर से संगठन द्वारा ज्ञापन भी वरिष्ठ कार्यालय और अधिकारियों की ओर भेजा गया है। उच्च स्तर से भी कृषि विज्ञान केन्द्रों के कर्मचारियों के वेतन भत्तों एवं सेवानिवृत्ति लाभों को पूर्व की भांति निरंतर रखे जाने का अनुरोध किया गया है।

सहकारी कार्यकर्ता प्रशिक्षण

छिंदवाड़ा। जिला सहकारी केंद्रीय बैंक छिंदवाड़ा में सहकारी कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता महाप्रबंधक अभय कुमार जैन द्वारा की गई।

कार्यक्रम की शुरुआत में क्षेत्रीय प्रबंधक इफको छिन्दवाड़ा द्वारा सभी समिति प्रबंधकों एवं शाखा प्रबंधकों को नैनो उर्वरकों के बारे में विस्तार से एवं इसके लाभ के बारे में अवगत करवाया। साथ ही वर्ष 2024-25 में समितियों द्वारा की गए बिक्री की जानकारी भी सभी के समक्ष प्रस्तुत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री जैन ने समितिवर नैनो उर्वरकों एवं अन्य इफको के उत्पादों की बिक्री की समीक्षा की नैनो उर्वरकों की उपयोगिता और इससे होने वाले लाभों के बारे में बताया। सभी समितियों को निर्देशित किया गया कि वे अपनी अपनी समिति के किसानों को नैनो उर्वरकों का वितरण करना सुनिश्चित करेंगे साथ ही उनको इसके लाभ के बारे में भी समझाएंगे,जिससे मृदा स्वास्थ के साथ साथ समितियों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आयेगा।

- इंजी. कैलाश चन्द्र महाजन
- डॉ. रामफूल अहिरवार (सहायक प्राध्यापक)
  कृषि महाविद्यालय जनेकृविवि गंजबासौदा, विदिशा (मप्र)
- डॉ. संजीव कुमार गर्ग (प्राध्यापक)
  कृषि महाविद्यालय, जनेकृविवि, जबलपुर (म.प्र.)

फलों एवं सब्जियों के निर्जलीकृत उत्पाद

फल एवं सब्जियों में पूर्ण नियंत्रण में, उनके पोषक तत्वों को प्रभावित किये बिना जल की मात्रा को उचित सीमा तक अलग कर देना निर्जलीकरण कहलाता है।

फल एवं सब्जियों में 80-90 प्रतिशत जल होता है इसलिये ये शीघ्र खराब होने लगती हैं। इनमें नमी की मात्रा कम करके इनको सुरक्षित रखा जा सकता है। फल एवं सब्जियों को सूर्यताप या धूप में प्राकृतिक वातावरण में जल अलग कर देने को सूखाना कहते हैं। सूक्ष्म जीवों एवं एन्जाइम को अपनी क्रियाशीलता के लिये उचित मात्रा में जल की आवश्यकता होती है। निर्जलीकरण द्वारा फल एवं सब्जियों में जल की मात्रा को इस सीमा तक कर दिया जाता है कि सूक्ष्म जीव एवं एन्जाइम जल के अभाव में निष्क्रिय हो जाते हैं ओर वे सुरक्षित रहते हैं। फलों के लिये 18-25 प्रतिशत तथा सब्जियों के लिये 14-20 प्रतिशत से अधिक जल है तो सूखे हुये फल एवं सब्जियों के शीघ्र खराब होने की संभावना रहती है।

निर्जलीकृत उत्पाद: हरी मटर, गाजर, फूलगोभी, पत्तागोभी, हरी मिर्च, पालक आदि तथा सेव, पपीता, आम, अनानास इत्यादि से निर्जलीकृत उत्पाद तैयार किये जाते हैं। सफेद प्याज से निर्जलीकृत उत्पाद जैसे ओनियन फ्लेक्स, लहसुन के उत्पादों जैसे गार्लिक फ्लेक्स, गार्लिक स्लाइस, गार्लिक पावडर इत्यादि की भी बाजार में विशेष मांग है।

निर्जलीकरण हेतु आवश्यक क्रियायें

फल एवं सब्जियों का चुनाव:

फल एवं सब्जियों के चुनाव में उनकी किस्म, पकने की अवस्था, ताजगी आदि का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

वर्गीकरण एवं श्रेणी चयन:

फलों एवं सब्जियों के वर्गीकरण में सड़े-गले, चोट खाये, रोगयुक्त फलों एवं सब्जियों को अलग कर देते हैं। श्रेणी चयन उनके पकने की अवस्था, आकार, रूप रंग, को देखकर किया जाता है।

फल एवं सब्जियों को धोना:

फल एवं सब्जियों को धोने से उनमें उपस्थित धूल-कण, सूक्ष्म जीव तथा अन्य रासायनिक पदार्थों के अंश दूर हो जाते हैं तथा फल एवं सब्जियां अपने प्राकृतिक स्वरूप में आ जाते हैं।

छीलना, गुठली/बीज निकालना और क्रोड निकालना:

फल एवं सब्जियों में बाहर की ओर कठोर आवरण होता है, इसे अलग कर दिया जाता है। छीलने का कार्य चाकुओं, मशीनों तथा रसायनों की सहायता से किया जाता है। फल एवं सब्जियों के भीतर का कठोर भाग जिसे क्रोड कहते हैं, जैसे सेव, गाजर, नाशपति, आदि में। इसे अलग कर दिया जाता है। फलों एवं सब्जियों में उपस्थित गुठली एवं बीज आदि को भी अलग कर लिया जाता है।

काटना:

फलों एवं सब्जियों को उचित आकार में काटा जाता है।

विवर्ण करना:

यह क्रिया केवल सब्जियों में की जाती है। सब्जियों को 2-5 मिनिट तक खौलते पानी में उबालकर, तुरंत ही ठण्डे पानी में रखकर ठण्डा करने की क्रिया को विवर्ण करना कहते हैं। यह क्रिया सब्जियों में उपस्थित एन्जाइम को निष्क्रिय करने, सूक्ष्म जीवों की संख्या कम करने, उतकों से हवा निकालने, रंग स्थिर करने हेतु की जाती हैं।

गंधक से उपचार:

फलों को तैयार करने के पश्चात उनमें गंधक का धुंआ तथा सब्जियों को तैयार करने के बाद उनको गंधक के लवणों के घोल में डुबाया जाता है। ये क्रियायें फलों के प्राकृतिक रंगों को हल्का बनाने के लिये, सूक्ष्म जीवों इत्यादि से सुरक्षा के लिये की जाती है।

निर्जलीकरण:

निर्जलीकरण की विधि में उपचारित फल एवं सब्जियों को नियंत्रित वातावरण में में रखते हैं।

नमी अनुकूलन:

सुखे हुये फल एवं सब्जी को कुछ समय के लिये ढेर बनाकर रखते हैं जिसमे कि अधिक सूखे हुये फल या सब्जियां आपस में नमी स्थानांतरण करते हैं जिसमें उनमें नमी समान रूप से वितरित हो जाती है।

पैकिंग: निर्जलीकृत फल एवं सब्जियों की नमी एवं वायु रहित पात्रों में पैकिंग की जाती है।

स्वस्थ मिट्टी स्वस्थ जीवन का आधार

फसल पैदावार बढ़ाने के लिए मृदा की देखभाल जरुरी

ग्वालियर। मिट्टी का संरक्षण नहीं बल्कि इस वक्त हम उसका दोहन कर रहे हैं। अधिक से अधिक पैदावार लेने के लालच में कैमिकल का छिड़काव कर खेत की मिट्टी को जहरीली बनाते जा रहे हैं। जिसके कारण फसलों को मिलने वाले पोषक तत्वों की कमी मृदा में आती जा रही है। जिसका असर हमें स्वयं के शरीर में दिखाई दे रहा है और बीमारियां हमें तेजी से घेर लेती हैं। जब हम खून जांच कराते हैं तो खून में पाए जाने वाले पोषक तत्वों की कमी बताई जाती है जिन्हें,जबकि इसकी आपूर्ति भोजन से होना चाहिए थी। इससे साफ है कि फसल की पैदावार तो बढ़ रही है पर उसमें पाए जाने वाले पोषक तत्व घट रहे हैं। इसलिए आज जरूरी है कि हम मृदा की देखभाल करें, उसका मापन और निगरानी रखते हुए प्रबंधन करें, जिससे उसमें पोषक तत्व बढ़ें। यह बात विश्व मृदा दिवस के अवसर पर राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के दत्तोपंत ठेंगड़ी सभागार में मुख्य वक्ता के रूप में आनंद कृषि विश्वविद्यालय, आनंद गुजरात के पूर्व डीन डा. के.पी. पटेल ने कही।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राजा मानसिंह संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर की कुलगुरू प्रोफेसर डा. स्मिता सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि मिट्टी की सुरक्षा, गहनों से भी अधिक जरूरी है। क्योंकि सोना, चांदी या हर मूल्यवान वस्तु सब मिट्टी से ही तैयार होती हैं और उससे भी मूल्यवान वस्तु भोजन है वह भी मिट्टी से तैयार होता है, जिसके बिना जीवन ही संभव नहीं है। तो फिर इतनी कीमत रखने वाली मिट्टी को हम कैसे हानि पहुंचने दे सकते हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविंद कुमार शुक्ला ने कहा कि इस कार्यक्रम शामिल हुए विद्यालय के विद्यार्थी इस धरा की धरोहर है। उनकी मानसिकता सरल है यदि उन्होंने ठान लिया तो मृदा के संरक्षण में उनका महत्वपूर्ण योगदान होगा। स्वस्थ मिट्टी, स्वस्थ जीवन के लिए हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाने की आवश्यकता है। संतुलित आहार के लिए हम संतुलित भोजन पैदा करे जिसके लिए हमें स्वस्थ मृदा की अत्यंत आवश्यकता है।

बालक, बालिकाओं के लैंगिक शोषण और दुरूपयोग जघन्य अपराध : डॉ. श्रीवास्तव

जबलपुर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा की प्रेरणा से कृषि महाविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में जेंडर आधारित हिंसा की रोकथाम हेतु जागरूकता अभियान कार्यक्रम ''हम होंगे कामयाब पखवाड़ा'' के तहत महिला सुरक्षा संवाद का आयोजन अधिष्ठाता छात्र कल्याण विभाग और महिला एवं बाल विकास विभाग परियोजना के संयुक्त तत्वाधान में अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, जबलपुर डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया। डॉ. श्रीवास्तव ने कहा कि हमारे समाज में बेटी को देवी का स्वरूप माना गया है, फिर भी हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जहां महिला, बेटियों और मां की सुरक्षा की बात होती है। इसलिये हम सभी को अपने आसपास ऐसा वातावरण निर्मित करना चाहिये कि जिससे हमारी मां, बेटी, बहन सुरक्षित महसूस करें। आपने कहा कि बालक, बालिकाओं के लैंगिक शोषण और दुरूपयोग जघन्य अपराध है। महिला सुरक्षा हो या फिर लिंग चयन आधारित गर्भपात, गिरते लिंगानुपात को रोकने के लिये ऐसे जागरूकता कार्यक्रम समय-समय पर होते रहना चाहिये।

इस अवसर पर डॉ. जयंत भट्ट, डॉ. अमित शर्मा, डॉ. बी.एस. द्विवेदी, डॉ. अमित झा, डॉ. पवन अमृते, डॉ. राकेश मरावी, डॉ. कीर्ति तंतुवाय, गौरीशंकर लॉवंशी, एड. अमित उपाध्याय, लता ध्रुवे, अनुरिता पांडेय सहित प्राध्यापक, वैज्ञानिक, अधारताल थाने के पुलिसकर्मी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहीं।

वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों की एक दिवसीय हड़ताल

दतिया। केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा 5 दिसम्बर 2024 को विश्व मृदा दिवस का आयोजन देश के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों एवं कृषि विभाग के माध्यम से पूरे देश में किया गया। वहीं पूरे देश के कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक एवं कर्मचारी आज हड़ताल करने को मजबूर हुये हैं। हड़ताल पर जाने की मुख्य वजह भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों को दिये जाने वाला बुनियादी लाभों में कटौती किया जाना है।

इस तारतम्य में राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय अंतर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र दतिया के वैज्ञानिक, अधिकारी कर्मचारी भी एक दिन की सामूहिक कल बंद हड़ताल पर रहे।

कृषि विज्ञान केन्द्र दतिया के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख से प्राप्त जानकारी अनुसार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा विगत 17 वर्षों से कृषि विज्ञान केन्द्र को पूर्ण बजट आवंटित किया जाता रहा है। किंतु विगत दो वर्षों से कृषि विज्ञान केन्द्रों के बजट में अभूतपूर्व कटौती की जा रही है। जिसमें वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को मिलने वाली चिकित्सा भत्ता, एनपीएस, ग्रेज्युटी, अवकाश नगदीकरण एवं अन्य लाभों में कटौत्रा किया जा रहा है। जिससे कर्मचारियों को विगत तीन माह से मासिक वेतन का भुगतान भी नहीं हुआ है। इस कारण मजबूर केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को सामूहिक हड़ताल पर जाने को मजबूर होना पड़ा है। यदि कर्मचारियों की मांगें पूरी नहीं की गई तब पूरे देश भर में इन मांगों को लेकर बड़े स्तर पर विरोध प्रदर्शन किया जायेगा।

हड़ताल में केन्द्र प्रमुख के अलावा वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एस.के. सिंह, वैज्ञानिक डॉ. रूपेश जैन, सबा फातमा, महेश प्रसाद एवं खुमान प्रसाद बघेल उपस्थित रहे।

बकरी पालन पर व्यावसायिक प्रशिक्षण

मंदसौर। कृषि विज्ञान केंद्र व पशुपालन एवं डेयरी विभाग के संयुक्त तत्वाधान में बकरी पालन विषय पर तीन दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण का समापन हुआ। प्रशिक्षण के अंतिम दिन डॉ. मनीष इंगोले, उपसंचालक, पशुपालन एवं डेयरी विभाग ने प्रशिक्षणार्थियों से अपील की की जो प्रशिक्षण के दौरान अपने ज्ञान का अर्जन किया है उसको धरातल पर लाने के लिए राष्ट्रीय पशुधन मिशन योजना का लाभ लें ताकि बकरी पालन, मुर्गी पालन आदि व्यवसाय प्रारंभ कर रोजगार का सृजन कर परिवार की आय में वृद्धि करें। योगेश सैनी, जिला विकास प्रबंधक, नाबार्ड ने बैंक से लोन लेने की प्रक्रिया से अवगत कराते हुए कहा कि नाबार्ड आपकी मदद हेतु सतत प्रयासरत है। आप शासकीय योजनाओं का ज्यादा से ज्यादा लाभ प्राप्त करें। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. जी.एस. चुंडावत ने कहा कि कृषकों को आय वृद्धि करने के लिए बकरी पालन एक मुख्य घटक साबित हो रहा है अत: कृषि के साथ-साथ बकरी पालन करें। डॉ. एस.पी. त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने बकरी के दूध के महत्व के बारे में जानकारी प्रदान की।

विद्यार्थियों ने कृषि विज्ञान केंद्र का किया भ्रमण

डिंडोरी। शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय डिंडोरी के कक्षा 11वीं एवं 12वीं कृषि विज्ञान के विद्यार्थियों ने कृषि विज्ञान केंद्र डिंडोरी का भ्रमण किया। जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर से संबद्ध कृषि विज्ञान केंद्र जाकर विद्यार्थियों ने आधुनिक कृषि के तरीके जाने। कार्यक्रम डॉ. पी.एल अम्बुलकर के मार्गदर्शन एवं डॉ. गीता सिंह के नेतृत्व में संपन्न हुआ। डॉ. अंबुलकर ने केंद्र की गतिविधियों की जानकारी दी। डॉ. गीता सिंह ने प्री एग्रीकल्चर टेस्ट की तैयारी हेतु आवश्यक दिशा प्रदान की। वर्तमान में आईसीएआर पूषा दिल्ली एवं पीएटी के माध्यम बीएससी कृषि में प्रवेश परीक्षा में प्राप्त मैरिट अनुसार चयन होता है।

कृषि विज्ञान में वर्तमान में अनेक अवसर प्राप्त होते हैं, जिसमें कृषि वैज्ञानिक, कृषि अनुसंधान, महाविद्यालय में शिक्षक, बैंक अधिकारी, मल्टीनेशनल कंपनी में भी अच्छे पैकेज में जॉब उपलब्ध है। कृषि विज्ञान का अध्ययन करके आधुनिक खेती करके सफल किसान बन सकते हैं। डॉ. अवधेश कुमार पटेल ने बीजों के प्रकार एवं सर्टिफाइड बीजों की उपयोगिता बताई। विद्यार्थियों ने टेक्निकल पार्क जाकर सब्जियों की नई किस्म धनिया सिम्बा, मैथी गोल्डन पर्ल, टमाटर काशी आदर्श एवं बैगन काशी उत्सव की नर्सरी को देखा एवं प्रति एकड़ उत्पादन को जाना। श्वेता मसराम ने विद्यार्थियों को उर्वरकों के उपयोग एवं प्रत्येक 3 वर्ष में मिट्टी की जांच को अनिवार्य कराने के विषय में बताया गया। उत्कृष्ट विद्यालय के लगभग 106 विद्यार्थियों को कृषि विज्ञान केंद्र का भ्रमण करा कर कृषि के व्यवहारिक पहलुओं से परिचित कराया गया। कार्यक्रम में ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव, बी एस सी कृषि के छात्रों का महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हुआ साथ ही शिक्षक जितेंद्र दीक्षित, इमरान मलिक एवं रोशनी आर्या की सहभागिता रही।

(पृष्ठ 5 का शेष)

मसूर की उन्नत .....

इस विधि में खेत तैयार करने की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु अच्छी उपज लेने के लिए सामान्य बुआई की अपेक्षा 1.5 गुना अधिक बीज दर का प्रयोग करें। ताल क्षेत्र में वर्षा का पानी हटने के बाद, सीधे हल से बीज नाली बना कर बुआई की जा सकती है। गीली मिट्टी वाले क्षेत्रों में जहां हल चलाना संभव न हो बीज छींट कर बुआई कर सकते हैं।

उर्वरक : मृदा परीक्षण के आधार पर समस्त उर्वरक अंतिम जुताई के समय हल के पीछे कूड़ में बीज की सतह से 2 सेमी गहराई व 5 सेमी साइड में देना सर्वोत्तम रहता है। सामान्यतः मसूर की फसल को प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा नाइट्रोजन, 40 किग्रा फास्फोरस एवं 20 किग्रा गंधक की आवश्यकता होती है। नत्रजन एवं फॉस्फोरस की संयुक्त रूप से पूर्ति हेतु 100 किग्रा डाइ अमोनियम फॉस्फेट प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करने पर उत्तम परिणाम प्राप्त होते हैं।

गौण एवं सूक्ष्म पोषक तत्व

गंधक (सल्फर) 20 किग्रा गंधक (154 किग्रा जिप्सम/फॉस्फोरस-जिप्सम या 22 किग्रा बेन्टोनाइट सल्फर) प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के समय प्रत्येक फसल के लिये देना पर्याप्त होगा। कमी ज्ञात होने पर लाल बलुई मृदाओं हेतु 40 किग्रा गंधक (300 किग्रा जिप्सम/फॉस्फोरस-जिप्सम या 44 किग्रा बेन्टोनाइट सल्फर) प्रति / की दर से प्रयोग करें।

बोरॉन-1.6 किग्रा बोरॉन (16.0 किग्रा बोरेक्स या 11 किग्रा डाइसोडियम टेट्राबोरेट पेन्टाहाइड्रेट) प्रति / की दर से बुवाई के समय में प्रत्येक फसल में दें।

अन्तरवर्तीय खेती

सरसों की 6 पंक्तियों के साथ मसूर की दो पंक्तियां व अलसी की 2 पंक्तियों के साथ मसूर की एक पंक्ति बोने पर विशेष लाभ कमाया जा सकता है।

सिंचाई : ताल क्षेत्रों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में वर्षा न होने पर अधिक उपज लेने के लिए बुआई के 40-45 दिन बाद व फली में दाना भरते समय सिंचाई करना लाभप्रद रहता है।

खरपतवार नियंत्रण

बुआई के तुरन्त बाद (48 घंटे के अंदर) खरपतवारनाशी रसायन पेन्डीमिथालीन 30 ईसी का 0.75-1 किग्रा सक्रिय तत्व (2.5-3 लीटर व्यापारिक मात्रा) प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। बुआई से 25-30 दिन बाद एक निंदाई करना पर्याप्त रहता है। यदि दूसरी निंदाई की आवश्यकता है तब बुवाई के 40-45 की फसल अवस्था पर करें।

पौध सुरक्षा

रोगः इस रोग का प्रकोप होने पर फसल की जड़ें गहरे भूरे रंग की हो जाती हैं तथा पत्तियां नीचे से ऊपर की ओर पीली पड़ने लगती है। तथा बाद में सम्पूर्ण पौधा सूख जाता है। किसी-किसी पौधे की जड़े शिरा सड़ने से छोटी रह जाती हैं।

कालर राट या पद गलनः यह रोग पौधे पर प्रारंभिक अवस्था में होता है। पौधे का तना भूमि सतह के पास सड़ जाता है। जिससे पौधा खिचने पर बड़ी आसानी से निकल आता है। सड़े हुये भाग पर सफेद फफूंद उग आती है जो सरसों की राई के समान भूरे दाने वाले फफूंद के स्कलेरोशिया है।

जड़ सड़नः यह रोग मसूर के पौधों पर देरी से प्रकट होता है, रोग ग्रसित पौधे खेत में जगह-जगह टुकड़ों में दिखाई देते हैं व पत्ते पीले पड़ जाते हैं तथा पौधे सूख जाते हैं। जड़े काली पड़कर सड़ जाती है तथा उखाड़ने पर अधिक्तर पौधे टूट जाते हैं व जड़ें भूमि में ही रह जाती हैं।

रोग प्रबंधन

- गर्मियों में गहरी जुताई करें।
- खेत में पकी हुई गोबर की खाद का ही प्रयोग करें।
- संतुलित मात्रा में खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे।
- बीज को 2 ग्राम थाइरम+1 ग्राम कार्बेन्डाजिम से एक किलोग्राम बीज या कार्बोक्सिन 2 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित कर बोआई करनी चाहिये।
- उक्टा निरोधक व सहनशील जातियां जैसे जेएल-3, जेएल-1, नूरी, आईपीएल 81, आर. व्ही. एल-31 का प्रयोग करें।

गेरूई रोगः इस रोग का प्रकोप जनवरी माह से प्रभावित होता है तथा संवेदनशील किस्मों में इससे अधिक क्षति होती है। इस रोग का प्रकोप होने पर सर्वप्रथम पत्तियों तथा तनों पर भूरे अथवा गुलाबी रंग के फफोले दिखाई देते हैं जो बाद में काले पड़ जाते हैं। रोग का भीषण प्रकोप होने पर सम्पूर्ण पौधा सूख जाता है।

रोग का प्रबंधनः प्रभावित फसल में 0.3% मेन्कोजेब एम-45 का 15 दिन के अन्तर पर दो बार अथवा हेक्जाकोनाजोल 0.1% की दर से छिड़काव करना चाहिये।

कीट नियंत्रणः मसूर की फसल में मुख्य रूप से माहु तथा फली छेदक कीट का प्रकोप होता है। माहू का नियंत्रण इमिडाक्लोरपिड 150 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर एवं फली छेदक हेतु इमामेक्टीन बेजोइट 100 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिये।

कटाई एवं मड़ाईः मसूर की फसल के पककर पीली पड़ने पर कटाई करनी चाहिये। पौधे के पककर सूख जाने पर दानों एवं फलियों के टूटकर झड़ने से उपज में कमी आ जाती है। फसल को अच्छी प्रकार सुखाकर बैलों के दायें चलोर मड़ाई करते हैं तथा औसाई करके दाने को भूसे से अलग कर लेते हैं।

उपजः मसूर की फसल से 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर दाना एवं 30-40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर भूसे की उपज प्राप्त होती है।

जबलपुर कार्यशाला के दौरान निर्धारित तकनीकी बिन्दु निम्नानुसार है।

मसूरः उन्नतशील प्रजातियां- पीएल-5, पीएल-7, जेएल-1, जेएल-3, एचयूएल 57, के-75 का प्रमाणित बीज प्रयोग करें।

- बीज उपचार हेतु 2 ग्राम कर्बोक्सिन+थाइरम या 5 ग्राम ट्राइकोडर्मा एवं थायोमिथाक्जाम 3 ग्राम प्रति किलोग्राम एवं राइजोबियम तथा पीएसबी कल्चर 5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से बीजोपचार कर बोनी करें।
- असिंचित क्षेत्रों में अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में तथा अर्द्धसिंचित अवस्था में मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर तक बोनी करे।
- छोटे दाने वाली किस्में 35 किग्रा प्रति हेक्टेयर तथा बड़े दाने वाली किस्मों का 40 किग्रा प्रति हेक्टेयर बीज दर का प्रयोग करें।
- उपलब्ध होने पर एक सिंचाई 45 दिन बाद और आवश्यक हो तो फलियां भरते समय सिंचाई करें।
- माहू कीट की रोकथाम के लिये मेटासिस्टॉक्स 25 ईसी 1.5 लीटर प्रति हेक्टे.या ट्राइजोफॉस 40 ईसी 1 लीटर प्रति हेक्टे. 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- पाले से बचाव के लिये घुलनशील सल्फर (गंधक) 0.1% (1 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें तथा मेड़ों पर धुंआ एवं हल्की सिंचाई करें।

भण्डारणः भण्डारण के समय दानों में नमी 10% से अधिक नहीं हो। भण्डार गृह में 2 गोली एल्युमिनियम फास्फाइड प्रति टन रखने से भण्डार कीटों से सुरक्षा मिलती है।

कृषक क्लब की बैठक आयोजित

समातपुर। सहजीवन समिति कल्याणपुर जिला शहडोल द्वारा समानपुर में प्रभुकृपा कृषक क्लब का आयोजन विगत दिवस किया गया जिसमें किसान क्लब के माध्यम से उन्नत खेती व लाभ की खेती कर समृद्ध हो। क्लब के माध्यम से किसानों को बताया कि सोलर फेसिंग के माध्यम से जंगली जानवरों से खेती को बचा सकते हैं। समस्त किसानों से अपील की गई कि देशी बीज का संग्रहण करें एवं आधुनिक मशीनरी के साथ-साथ अतिरिक्त आय किसानों को उपलब्ध हो। इस कार्यक्रम में सहजीवन समिति के श्रीमती मनीषा माथनकर ने बताया कि इस समय किसान खेती को लाभ का धंधा कैसे बनाया जाए के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में प्रदीप सिंह ने सभी सदस्यों को वर्तमान में खेती की उपज के बारे में जानकारी दी गई। कार्यक्रम में श्रीमती प्रेमवती, ज्ञानसिंह, कुमन सिंह, कुबेर सिंह, उमेश प्रसाद, चैनसिंह, सुखेन्द्र सिंह, गिरधारीलाल, हरिदीन, बृजेन्द्र नापित, कंघी कोल आदि उपस्थित थे।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875,
9300754675, 9826686078

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

★औषधीय★वन ★सब्जी★फूल★बीज★स्प्रे पंप एवं पाट्र्स ★कीटनाशक ★ जैविक खाद ★ गार्डन टूल ★ जैविक उत्पाद ★ ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।

वितरक - ★ निर्मल सीड्स, जलगांव ★ कलश सीड्स, जालाना ★ अंकुर सीड्स, नागपुर ★ वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ★ दिनाकर सीड्स, गुजरात ★ सटिंड सीड्स, दिल्ली ★ फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ★ स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ★ जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ★ स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ★ अनु प्रोडक्ट्स लि. ★ श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

अर्जुन इण्डस्ट्रीज
AN ISO 9001:2015 QMS CERTIFIED INDUSTRIES
समस्त कृषि यंत्रों के निर्माता एवं विक्रेता
• ट्राली • टैंकर • कल्टीवेटर • बोनी मशीन • पल्टीप्लाऊ

लाम्बाखेड़ा ओवरब्रिज, बायपास चौराहा, बैरसिया रोड, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9826097991, 9826015664, 9981415744

पाले से बचाने के लिये सम सामयिक सलाह

शाजापुर। जिले में रबी फसलों की वर्तमान स्थिति अच्छी है। लेकिन लगातार गिरता हुआ तापक्रम एवं बढ़ती हुई ठंड फसलों को नुकसान पहुंचा सकती है। ऐसी सम्भावना है कि आगामी दिनों में पाले की सम्भावना है। रात्रि का तापक्रम 5 डिग्री सेन्टीग्रेड से कम हो सकता है।

इस विषम परिस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी.आर. अंबावतिया द्वारा पाले एवं ठंड से फसलों को बचाने के लिये किसान भाईयों को सावधानीपूर्वक उपाय का की सलाह दी।

- सिंचाई करने से खेत का तापक्रम 0.5 से 2 डिग्री सेन्टीग्रेड तक बढ़ जाता है। पाले की सम्भावनाओं को देख खेत में हल्की सिंचाई स्प्रिंकलर से करे जिससे मिट्टी गीली रहें। बहुत अधिक या कम पानी ना दें।
- कुछ रसायनों के उपयोग से भी पाले से बचाव किया जा सकता है। थायोयूरिया की 500 ग्राम मात्रा का एक हजार लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। 8 से 10 किलोग्राम सल्फर डस्ट प्रति एकड़ बुरकाव अथवा वेटेबल या घुलनशील सल्फर 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना भी पाले के विरुद्ध कारगर उपाय पाया गया है।
- खेतों व बगीचों में धुआं हेतु नम घास या टहनियों को इस तरह जलायें कि धुआं खेतों पर एक परत बना लें व खेत में फसलों व पौधों के उपर धुआं बना रहें। इससे तापक्रम में 5 डिग्री सेन्टीग्रेड अंतर आ जाता है। 6 से 8 जगहों पर धुआं करें। जला हुआ इंजन आयल या टायर जलायें तो ज्यादा धुआं हो जायेगा। यह प्रकिया आधी रात्रि के बाद करने से ज्यादा कारगर होता है।

चना, आलू, मटर, मसूर फसल में सरसों के अंतरवर्तीय फसल लेने से हवा की ठंडी तरंगें फसलों को कम नुकसान पहुंचाती है।

- संतरा, आम, नींबू, अनार, बेर, सीताफल एवं पपीता के पौधों की घास, फूस, ज्वार के कड़वी की टाटीयों से ढंकें।
- बड़े पौधों के उपर ताड़ के पत्ते या सूखी घास फैला दें। टाट से ढंके इस तरह पौधों के उपर ठंड से बचाव करें।
- ठंड से बचाने हेतु पशुओं को खुले में न रखें एवं खानपान का उचित प्रबंध करें।

कृषि छात्रायें सीख रहीं कृषि की बारीकियां : डॉ. कंसाना

दतिया। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय ग्वालियर से कृषि स्नातक अंतिम वर्ष की 10 छात्रायें कृषि विज्ञान केन्द्र दतिया में ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव हेतु 6 माह के लिये आई हुई हैं। यह छात्रायें कृषि विज्ञान केन्द्र दतिया में फसल संग्रहालय में गेहूं एवं जौ की विभिन्न किस्मों की बीज उपचार, बोनी, सिंचाई, उर्वरक, खरपतवार, सिंचाई, रोग-कीट एकीकृत व्याधियों के प्रबंधन के साथ-साथ कृषि का प्रायोगिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर रही हैं।

डॉ. विश्वनाथ सिंह कंसाना प्रभारी ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव ने कृषि छात्राओं को फसल संग्रहालय के लिये प्रदर्शन हेतु प्लॉटों का लेआउट के निर्माण की तकनीकी, गेहूं एवं जौ की किस्मों को पौधे से पौधे एवं लाईन से लाईन की दूरी तकनीकी का प्रबंधन करने के साथ-साथ उक्त फसलों के किस्मों की विशेषताओं के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया। साथ ही साथ कृषि छात्राओं को कृषि विज्ञान केन्द्र में विभिन्न इकाईयां जैसे बकरी पालन, मुर्गीपालन, अजोला इकाई, प्राकृतिक खेती इकाई, नर्सरी, अमरूद, नीबू, मौसमी के बगीचों में भ्रमण कराकर बारीकी से प्रायोगिक तकनीकी जानकारी प्रदान की। इन छात्राओं को समय-समय पर डॉ. अवधेश सिंह केन्द्र प्रमुख के निर्देशानुसार डॉ. एस.के. सिंह, प्रमुख वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान), डॉ. ए.के. सिंह वरिष्ठ वैज्ञानिक (पौध संरक्षण), डॉ. रूपेश जैन वैज्ञानिक (पशुपालन) द्वारा कृषि एवं संबंधित विषयों का प्रायोगिक एवं सैद्धांतिक तरीके से बताया जाता है। छात्राओं का आवास प्रबंधन अर्चना शाक्य एवं सबा फातमा (छात्रावास अधीक्षक) की देखरेख में किया जा रहा है।

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी,मानसरोवर कॉम्पलेक्स,हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824

मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16,ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्यता फार्म

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी,मानसरोवर कॉम्पलेक्स,हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824

मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम..

संस्था का नाम..

पूरा पता..

ग्राम.......................पोस्ट.......................तहसील.......................

जिला.......................राज्य.......................पिन कोड

दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

वार्षिक	: 700/-	द्विवार्षिक	: 1300/-
त्रिवार्षिक	: 1900/-	पंचवर्षीय	: 3100/-
दसवर्षीय	: 6100/-	आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में)................ (शब्दों में)................

बैंक का नाम................ ड्राफ्ट चेक क्रमांक................

दिनांक................ संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान................ प्रतिनिधि का नाम एवं हस्ताक्षर हस्ताक्षर सदस्य एवं संस्था सील

दिनांक................

अंतरराष्ट्रीय मृदा दिवस पर कृषि वैज्ञानिकों ने किया विचार मंथन

मृदा स्वास्थ्य और जलवायु संरक्षण के लिए पुनर्योजी कृषि अपनाना जरूरी

भोपाल। केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल में केन्द्रीय मृदा संस्थान तथा सॉलीडेरीडॉड की ओर से आयोजित अंतरराष्ट्रीय मृदा दिवस के अवसर पर शीर्षस्थ मृदा वैज्ञानिकों तथा कृषि एवं अन्य विभागों के विशेषज्ञों ने मिट्टी के गिरते स्वास्थ्य पर चिन्ता की तथा पुनियोंजी खेती प्रणालियों के द्वारा जलवायु सुधारने की दिशा में किये जा रहे शोध पर दृष्टि पत्र प्रस्तुत किये।

अमरीका की ओहियो यूनीवर्सिटी के विश्वविख्यात वैज्ञानिक पद्मश्री डॉ. रतन लाल का व्याख्यान इस आयोजन की प्रमुख उपलब्धि रहा। डॉ रतनलाल ने अपने दीर्घ अनुभव के आधार पर मिट्टी की घटती उर्वर क्षमता और कॉर्बन के गिरते स्तर के लिए रासायनिक उर्वरकों के असंतुलित प्रयोग किये जाना बताया। उन्होंने कहा कि मिट्टी के साथ जलवायु के स्तर में सुधार के लिए प्राकृतिक विधियों को पुर्नियोजी खेती के तरीकों से ही सशक्त बनाया जाना होगा। डॉ. रतन लाल ने कई पौराणिक ग्रंथों के उदाहरण देते हुए कहा कि मिट्टी के स्वास्थ्य और उर्वरता को बढ़ाने के लिए संचेतना बहुत पहले से है। किन्तु उत्पादन की होड़ तथा बढ़ती जनसंख्या की उदरपूर्ति की आवश्यकताओं ने कृषि रसायनों के प्रयोग को जिस अंधाधुध तरीके से बढ़ाया है, उसने प्राकृतिक संतुलन को बुरी तरह से प्रभावित किया है। इसलिए मृदा को अब उपचार की आवश्यकता स्पष्ट महसूस हो रही है।

मुख्यातिथी, भारत सरकार के उपमहानिदेशक डॉ. एस.के. चौधरी ने कहा कि कृषि क्षेत्र को जलवायु परिवर्तन, घटते जल स्तर, मिट्टी के क्षरण और जैव विविधता के नुकसान के कारण महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, घटते जल स्तर, मिट्टी के क्षरण और जैव विविधता के नुकसान के कारण इसे महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, 2050 तक वैश्विक खाद्य मांग को पूरा करने के लिए, कृषि उत्पादन में 60 प्रतिशत की वृद्धि करनी होगी, और अनुमान है कि टिकाऊ मिट्टी प्रबंधन के माध्यम से 58% तक अधिक भोजन का उत्पादन किया जा सकता है।

प्रमुख आयोजक संस्था सॉलीडेरीडॉड-एशिया के प्रबंध संचालक डॉ शतादु्रु चटोपाध्याय ने इस अवसर पर कहा-कृषि क्षेत्र में मृदा और पर्यावरणीय प्रभावों की गंभीर चुनौतियों का समाधान करने और 2050 तक लगभग 10 बिलियन वैश्विक आबादी को खिलाने के लिए भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, टिकाऊ और स्मार्ट कृषि प्रथाओं के एक पैकेज को अपनाए जाने का यह उचित समय है, जो कृषि प्रणाली का लचीलापन बढ़ा सकता है, किसानों की आय बढ़ा सकता है। इस अवसर पर पद्मश्री वैज्ञानिक डॉ एमएच मेहता, गुजरात कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति ने वीडिओ कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा सभा को संबोधित किया। सॉलीडेरीडॉड द्वारा पुर्नियोजी खेती पर आधारित वार्षिक कैलेंडर एवं भरतखंड एफपीओ द्वारा उत्पादित बायो प्रॉडक्ट्स की लांचिंग भी की गई। आईआईएसएस के फोल्डर्स भी लोकार्पित किये गए। कार्यक्रम के दूसरे हिस्से में विभिन्न विभागों तथा संस्था के प्रतिनिधियों ने अलग-अलग विषयों पर पैनल चर्चा की।

डॉ सी.आर.मेहता, निदेशक, केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, डॉ सुरेश मोटवानी, महानिदेशक सॉलिडेरिडाड, डॉ एके पात्रा मृदा विज्ञान संस्थान, डॉ डी वी सिंह आई आई एस डब्ल्यू, डॉ के वी राव, डॉ जे के कन्नौजिया, डॉ सुरेश मोटवानी महा प्रबंधक सॉलिडरिडाड मध्यप्रदेश, डॉ रामरतन सोमैया, डॉ ए के विश्वकर्मा, डॉ एमपी सिंह, मलय नाबार्ड, हिमांशु बैस, एच आर प्रभाकर आदि ने विशेष रूप से चर्चा में भाग लिया। कार्यक्रम का सफल संचालन एस वी श्रीवास्तव एवं खुशबू रानी ने किया।

कृषक दूत की सदस्यता लेकर डायरी मुफ्त पायें

अब नये आकर्षक आकार में

कीमत 225/- रु. मात्र

नव वर्ष पर मित्रों एवं स्नेहीजनों को भेंट का सर्वोत्तम उपहार

कृषक दूत डायरी 2025

कृषक दूत डायरी 2025 के प्रमुख आकर्षण

- केन्द्र एवं राज्य पोषित विभिन्न कृषि योजनाओं की जानकारी।
- प्रमुख फसलों की कृषि कार्यमाला एवं उन्नत किस्मों की विस्तृत जानकारी।
- तहसील, विकासखण्ड, कृषि उपज मंडियों की सूची।
- प्रत्येक पृष्ठ पर कैलेण्डर तिथि, व्रत एवं त्यौहारों की जानकारी।
- मध्यप्रदेश में कार्यरत कृषि आदान प्रदायक कंपनियों की सूची।

संपर्क करें ➡ कृषक दूत

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824 मो. : 9425013875, 9300754675, 9827352535
Email:- krishak_doot@yahoo.co.in, Website : www.krishakdoot.org

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार

कृषक दूत

पृष्ठ क्रमांक-16
भोपाल, मंगलवार 17 से 23 दिसम्बर 2024

उम्मीद से ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

60.5 HP DI 6565 AV

TREM-IV ENGINE

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार इंजन

विशेषताएं

- पावर स्टीयरिंग
- कांस्टेंट मेश गियर
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्यूल क्लच
- लिफ्ट 2000 kg
- तेल में डूबे ब्रेक
- आगे के टायर 7.5x16
- पीछे के टायर 16.9x28

दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- मैकेनिकल स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- व्हील बेस 1960 MM
- सिंगल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन
1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.
Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com